bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –34 अंक – 17

वर्तमान

कमल ज्योति

संगठन गढ़े चले, सुपंथ पर बढ़े चले...

₹10

भारतीय जनता पार्टी
स्थापना दिवस
6 अप्रैल

स्थापना दिवस
Prime Minister

अभियान

डोनेशन

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

कोटिशः नमन !

कमल ज्योति के प्रथम सम्पादक स्व० लालजी टण्डन जी की जयन्ती पर सादर श्रद्धांजलि।

सम्पादकीय

सामाजिक पथ पर अविचल वटवृक्ष

42 वर्ष पूर्व बनी भारतीय जनता पार्टी ने अपनी स्थापना से ही ये तय कर लिया था कि समाज में व्याप्त असमानता और वैमनस्यता के भाव को मिटा कर समाज में सभी के लिए समान अवसर प्रदान करना है ताकि सब साथ – साथ चल सकें। इसीलिए बाबा साहब आंबेडकर का तैलीय चित्र संसद में लगे तथा उन्हें भारत रत्न मिले, इसके लिए आवाज़ को मुखर करने का कार्य किसी और ने नहीं बल्कि सन 1978 में अटल बिहारी वाजपेयी ने ही किया। वहीं 1990 में बाबा साहब की आदमकद मूर्ति, संसद परिसर में लगे इस माँग का समर्थन भी भाजपा के सभी नेताओं ने एक स्वर में किया। यह भाजपा की समाजिक न्याय और उसको संबल देने का अभिन्न कदम था जिसपर चलते हुये आज भाजपा ने स्वयं को एक वटवृक्ष बना लिया है। जिसके घेरे में समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को आसरा और छांव मिल रहा है।

भाजपा की सरकार ने ही दलितों को मिलने वाली आर्थिक सहायता, छोटे काम धंधे, कारोबार हेतु खोलने में पहले से चल रहे उस नियम को हटाने का काम किया जिसमें वो बकरी और सुअर ही पाल सकते थे। सरकार ने समाज के उन वर्गों को पैसा दिया और कहा आप स्वेच्छा के अनुसार कोई भी काम करें जिसमें आप स्वयं को निखार कर समाज की मुख्यधारा के बराबर आ जाये।

भाजपा की पहली अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में समाज के आरक्षित वर्गों के लिए बैकलॉग नौकरियों को पहली बार भरा गया। इसी समय सरकार ने सरकारी नौकरियों में सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो, इस दृष्टि से 200 प्वाइंट रोस्टर को लगाने का काम किया। पदोन्नती में आरक्षण पर अधिनयम लाकर उसे लागू करने का काम भी भाजपा की सरकार ने ही किया, परंतु भाजपा सरकार के जाने के बाद उसे अगली सरकारें ठीक से लागू नहीं कर पाईं। समाज के हर व्यक्ति की चिंता करने की मानसिकता के कारण आज की वर्तमान सरकार ने भी समाज में सभी का विकास हो इस दृष्टि से बहुत से जनकल्याणकारी कार्यक्रमों का संचालन किया। जिस पथ पर ही चलकर वर्तमान में केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने अनुसूचित जाति जनजाति के लिए चलने वाली विभिन्न योजनाओं के लिए सबसे ज्यादा राशि आवंटित किया। जिसकी राशि 1,2600 करोड़ रुपए है। सरकार से मुद्रा बैंक योजना के द्वारा 8 करोड़ से ज्यादा ऋण राशि केवल अनुसूचित जाति, जनजाति के लोगों ने लिया है। इस योजना ने बाबा साहब आंबेडकर के उस सपने को भी साकार किया जो उन्होंने 1918 साउथ बोरो कमेटी के समक्ष प्रस्तुत अपने प्रतिवेदन में की थी। इसी प्रकार से "स्वच्छ भारत अभियान" से ग्रामीण भारत में सम्मान और अपमान की एक परिचर्चा प्रारंभ हुई। आज घर में शौचालय होना सम्मान का प्रतीक है। ये अभियान स्वस्थ्य पर्यावरण के साथ जुड़ा है, ग्रामीण भारत में बीमारी का बड़ा कारण शौच के लिए बाहर जाना है और मक्खियों के द्वारा होने वाली ज्यादातर बीमारियों में काफी कमी आई है।

बाबा साहब चाहते थे की दलित उद्यमियों की एक बड़ी फौज खड़ी हो। इस मंशा को सरकार ने मुद्रा और स्टार्ट–अप इंडिया के माध्यम से पूरा करने का काम किया है। इसमें सबसे बड़ी बात हैं 50000 की राशि से लेकर 1 करोड़ तक की राशि अनुसूचित जाति जनजाति ने ली है। केंद्र व राज्य सरकार ने आयुष्मान योजना, आवास योजना, हर घर में नल से जल, किसान सम्मान निधि, मुफ्त टीकाकरण, स्वच्छ भारत मिशन, गरीब कल्याण अन्न योजना और पोषण अभियान चलाए हैं। जिसने समाज के उस वर्ग को लाभ पहुंचाया है जिसने अपने परिश्रम से देश को विकास के पथ पर आगे बढाया है। इसलिये जब भाजपा अपने सथापना दिवस से लेकर 14 अप्रैल तक सामाजिक न्याय यात्रा को लेकर कार्यकर रही है तब उसके कई मायने राजनीति को दूसरी दिशा की ओर ले जाते हैं।

इस तात्पर्य केवल इतना भर नहीं है कि सामाजिक न्याय पखवाड़े के तहत पार्टी के नेता और कार्यकर्ता राज्य के दलित, पिछड़े और वंचित समाज के लोगों के बीच जा रहे हैं बल्कि उसका सुफल ये हैं कि उनके दुख–दर्द बांटने की काम कर रहें हैं। उनकी समस्याओं का समाधान और उन्हें सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी व लाभ देते हुए पार्टी के साथ जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पार्टी को केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे 14 कार्यक्रमों के साथ वंचित व जरूरतमंद लोगों के बीच जाने में मदद मिल रही है। पार्टी व सरकार का पूरा फोकस समाज के दलित, पिछड़े व वंचित वर्ग के कल्याण की तरफ है। केंद्र व राज्य सरकारों ने आयुष्मान योजना, आवास योजना, हर घर में नल से जल, किसान सम्मान निधि, मुफ्त वैक्सीनेशन, स्वच्छ भारत मिशन, गरीब कल्याण अन्न योजना और पोषण अभियान चलाए हैं। आज लगभग सभी गाँव बिजली युक्त हैं, जो 70 वर्षों से अंधेरे में थे। बाबा साहब आंबेडकर को लेकर उनसे देश प्रेरणा ले सके इस निमित पाँच तीर्थ बनाने का काम किया गया।

बाबा साहब को जानने और समझने का ऐसा कार्य जिससे देया के अंदर एकरूपता विकसित हो उस पथ पर आज हमारी सरकारें चल रही है। इसका परिणाम है कि, देशभर में भाजपा को अपार जनसमर्थन मिल रहा है। देश में विधानसभा चुनावों में भाजपा लगातार सरकार बना रही है। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनावों के तुरंत बाद विधान परिषद चुनावों में भाजपा ने 33 सीटें जीतकर विधान परषिद में पूर्ण बहुमत लेकर दिखा दिया है कि भाजपा समाज के हर वर्ग के साथ खडी है और हर वर्ग भाजपा को अपना भर पूर समर्थन दे रहा है।

akatri.t@gmail.com

एक भारत, श्रेष्ठ भारत का संकल्प...

नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारतीय जनता पार्टी के 42वें स्थापना दिवस पर वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से देश भर के पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया और उनसे देश के नवनिर्माण में और जन–जन की सेवा में कटिबद्ध होकर महती भूमिका निभाने का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे आजादी के अमृत महोत्सव को कर्तव्यकाल में बदल दें। उन्होंने चैत्र नवरात्र की पंचमी अधिष्ठात्री स्कंदमाता को नमन करते हुए कहा कि हाल ही में हुए विधान सभा चुनाव में चार राज्यों में भारतीय जनता पार्टी सरकार की पूर्ण बहुमत से वापसी हुई है, इससे भाजपा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ गई है।

श्री मोदी ने भाजपा के 42वें स्थापना दिवस पर जन संघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी तक, संगठन और पार्टी के निर्माण में खुद को खपाने वाले सभी नाम–अनाम महापुरुषों को नमन करता हूं। मैं देश और दुनिया भर में फैले भाजपा के प्रत्येक सदस्य को बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से लेकर कोहिमा तक भाजपा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को निरंतर सशक्त कर रही है। इस बार का स्थापना दिवस तीन और वजहों से बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। पहला कारण है कि इस समय हम देश की आजादी के 75 वर्ष का पर्व मना रहे हैं, आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। ये प्रेरणा का बहुत बड़ा अवसर है। दूसरा कारण है– तेजी से बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियां, बदलता हुआ ग्लोबल ऑर्डर। इसमें भारत के लिए लगातार नई संभावनाएं बन रही हैं। तीसरा कारण भी उतना ही अहम है। कुछ सप्ताह पहले चार राज्यों में भाजपा की डबल इंजन की सरकारें वापस लौटी हैं। तीन दशकों के बाद राज्यसभा में किसी पार्टी के सदस्यों की संख्या 100 तक पहुंची है।

कि वैश्विक दृष्टिकोण से देखें या राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, भाजपा और भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व लगातार बढ़ रहा है। इसलिए भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता देश के सपनों के प्रतिनिधि है, देश के संकल्पों के प्रतिनिधि है। इस अमृतकाल में भारत की सोच आत्मनिर्भरता की है। लोकल को ग्लोबल बनाने की है। सामाजिक न्याय की है। समरसता की है। इन्हीं संकल्पों को लेकर विचार के रूप में हमारी पार्टी की स्थापना हुई। ये अमृतकाल हमारे कार्यकर्ता के लिए कर्तव्य काल है। हमें देश के संकल्पों के साथ निरंतर जुड़े रहना है और खुद को खपा देना है। हमारी सरकार राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए काम कर रही है। आज देश के पास नीतियाँ भी हैं, नीयत भी है।

भारतीय जनता पार्टी के 42वें स्थापना दिवस पर मैं देश और दुनिया भर में फैले भाजपा के प्रत्येक सदस्य को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूं। कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कोहिमा तक भाजपा एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संकल्प को निरंतर सशक्त कर रही है।

श्री मोदी ने कहा कि एक समय था जब लोगों ने मान लिया था कि सरकार किसी की भी आए लेकिन देश का कुछ नहीं हो पाएगा। चारों ओर निराशा ही निराशा का वातावरण व्याप्त था लेकिन आज देश का एक–एक जन गर्व से यह कह रहा है कि देश बदल रहा है। तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज दुनिया के सामने एक ऐसा भारत है, जो बिना किसी डर या दबाव के अपने हितों के लिए अडिग रहता है। जब पूरी दुनिया दो विरोधी ध्रुवों में बंटी हो, तब भारत को एक देश के रूप में देखा जा रहा है, जो दृढ़ता के साथ मानवता की बात कर सकता है।

कि आज देश के पास निर्णय शक्ति और निश्चय शक्ति भी। आज देश के पास निर्णय शक्ति और निश्चय शक्ति भी है। आज हम लक्ष्य तय कर रहे हैं और उन्हें पूरा भी कर रहे हैं। कुछ समय पहले ही देश ने 400 बिलियन डॉलर यानी 30 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा उत्पादों पर एक्सपोर्ट का टारगेट पूरा किया है। कोरोना काल में ये टारगेट पूरा करना भारत के सामर्थ्य को दिखाता है। भारत कोरोना की लड़ाई को संसाधनों से लड़ रहा है, लगातार जीतने का प्रयास कर रहा है। आज भारत 180 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन डोज देने वाला देश है। इतने मुश्किल समय में भारत 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन दे रहा है।

गरीबों, दलितों, पिछड़ों, महिलाओं के हितों के लिए, उनके उत्थान के लिए काम करना, ये हमारी पार्टी के मूल संस्कार हैं। इसलिए आज गरीबों, दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों के साथ ही महिलाएं भाजपा के पक्ष में खड़ी हुई हैं, वो नए युग की ताकत का प्रतिबिंब है।

श्री मोदी ने कहा कि हमारे देश में दशकों तक कुछ राजनीतिक दलों ने सिर्फ वोट बैंक की राजनीति की है। कुछ लोगों को ही वायदे करो, ज्यादातर लोगों को तरसा कर रखो। भेदभाव, भ्रष्टाचार.. ये सब वोट बैंक की राजनीति का साइड इफेक्ट था। भाजपा ने इस वोट बैंक की राजनीति को टक्कर दी और इसके नुकसान देश को समझाने में सफल रही है। भाजपा की नेकनीयत से किए जाने वाले कामों की वजह से जनता का भरपूर आशीर्वाद मिल रहा है। आज दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, किसानों, नौजवानों के साथ ही जिस तरह महिलाएं भाजपा के पक्ष में मजबूती से खड़ी हुई हैं, वो अपने आप में नए युग की ताकत का प्रतिबिम्ब हैं। भाजपा का विजय तिलक करने में सबसे आगे माताएं–बहनें आती हैं। ये चुनावी घटना नहीं, सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण है जिसका इतिहास में विश्लेषण किया जाएगा। महिलाओं में सुशासन और कड़े कानूनों से सुरक्षा का भाव हमने पैदा किया। स्वास्थ्य से लेकर रसोई की चिंता की है। मातृशक्ति में आत्मविश्वास पैदा हुआ है जो भारत को नई दिशा दे रही है। विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना हमारा दायित्व है।

हमारी सरकार राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए काम कर रही है। आज देश के पास नीतियां भी हैं, नियत भी है। आज देश के पास निर्णयशक्ति भी है, और निश्चयशक्ति भी है। सबका साथ, सबका विकास के मंत्र के साथ हम सबका विश्वास प्राप्त कर रहे हैं।

कि आज़ादी के इस अमृत काल में हमने सैचुरेशन यानि जनकल्याण की हर योजना को शत प्रतिशत लाभार्थियों तक पहुंचाने का जो संकल्प लिया है, वो बहुत विराट है। सैचुरेशन तक पहुंचने के इस अभियान का मतलब है – भेदभाव की सारी गुंजाइश को खत्म करना, तुष्टिकरण की आशंकाओं को समाप्त करना, स्वार्थ के आधार पर लाभ पहुंचाने की प्रवृत्ति को खत्म करना, और समाज की आखिरी पंक्ति में खड़े आखिरी व्यक्ति तक सरकारी लाभ पहुंचे, ये सुनिश्चित करना।

हमारे लिए राजनीति और राष्ट्रनीति साथ–साथ चलते हैं। हम राजनीति से राष्ट्रनीति को अलग करके चलने वाले लोग नहीं हैं। ये भी सच्चाई है कि अभी भी देश में दो तरह की राजनीति चल रही है। एक राजनीति है परिवार भक्ति की और दूसरी है, राष्ट्र भक्ति की। केंद्रीय स्तर पर अलग–अलग राज्यों में हमारे यहां कुछ राजनीतिक दल हैं, जो सिर्फ और सिर्फ अपने–अपने परिवार के हितों के लिए काम करते हैं। परिवारवादी सरकारों में परिवार के सदस्यों का स्थानीय निकाय से लेकर संसद तक दबदबा रहता है। ये अलग राज्यों में हों, पर परिवारवाद के तार से जुड़ रहते हैं। एक दूसरे के भ्रष्टाचार को ढंककर रखते हैं। इन परिवारवादी पार्टियों ने देश के युवाओं को भी आगे नहीं बढ़ने दिया। उनके साथ हमेशा विश्वासघात किया है। आज हमें गर्व होना चाहिए कि आज भाजपा ही इकलौती पार्टी है, जो इस चुनौती से देश को सजग कर रही है। लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ करने वाली ये पार्टियां, संविधान और संवैधानिक व्यवस्थाओं को भी कुछ नहीं समझतीं। ऐसी पार्टियों से आज भी हमारे कार्यकर्ता अन्याय, अत्याचार और हिंसा के खिलाफ लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ लड़ रहे हैं।

कि आज देश जमीन से जुड़े तमाम अभियानों को आगे बढ़ा रहा है। सरकार के अभियानों के सारथी भाजपा के कार्यकर्ता ही हैं। अभी कुछ दिन बाद ही ज्योतिबा फुले और बाबा साहब अंबेडकर की जयंती है। पार्टी आज से सामाजिक न्याय पखवाड़ा शुरू करने जा रही है। आपसे आग्रह है कि इस अभियान में सक्रियता से जुड़ें। सरकार गरीबों के लिए जो योजना चला रही है, उनके प्रति देशवासियों को जागरूक करें। कार्यकर्ता के रूप में पार्टी मुझे जो आदेश करेगी, मैं भी उसे कार्यकर्ता के रूप में पूरी मेहनत करूंगा। आपका साथी कार्यकर्ता होने के नाते मेरी आपसे यही अपेक्षा है।

अपने उद्‌बोधन की शुरुआत में ही माननीय प्रधानमंत्री ने कहा कि आज नवरात्रि की पंचमी तिथि भी है। आज के दिन हम सभी मां स्कंदमाता की पूजा करते हैं। हम सबने देखा है कि मां स्कंदमाता कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं और अपने दोनों हाथों में कमल का फूल थामें रहती हैं। मेरी प्रार्थना है कि मां स्कंदमाता का आशीर्वाद देशवासियों पर, भाजपा के प्रत्येक कर्मठ कार्यकर्ता और प्रत्येक सदस्य पर हमेशा बना रहे।

42वां स्थापना दिवस

हम रहे ना रहें, विचारधारा बढ़े.. भारत आगे बढ़े...

जगत प्रकाश नड्डा

राष्टीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने भारतीय जनता पार्टी के 42वें स्थापना दिवस पर नई दिल्ली के करोलबाग से पूरे हर्षोल्लास के साथ निकलने वाली शोभा यात्रा में भाग लिया और कहा कि 6 अप्रैल 1980 में, आज ही के दिन भाजपा का गठन हुआ था और उस वक्त हमलोगों ने दिल्ली में निर्णय लिया था कि हम सभी मिलकर भारतीय जनता पार्टी के रुप में राजनैतिक कार्य को आगे बढ़ाएंगे। एक राजनैतिक दल के रुप में भाजपा आज अपने 42 साल पूरे किए हैं, इस शुभ अवसर पर पार्टी के करोड़ों करोड़ों कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूँ और पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करता हूं।

दीया जलाने से लेकर कमल खिलाने की एक बहुत ही लंबी यात्रा हमने पूरी की है और अपने आप को इसमें खपाया है। शून्य से शिखर की इस यात्रा में हमने बहुत सारे उतार–चढ़ाव देखे हैं।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का संबोधन आज सुबह दस बजे हुआ। हमारे 8 लाख से ज्यादा बूथों पर करोड़ों करोड़ों कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री का संबोधन सुना। यह इस बात को दर्शाती है कि विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी, भारतीय जनता पार्टी जब अपना स्थापना दिवस भी मनाती है, तो वह दुनिया का सबसे बड़ा स्थापना दिवस का कार्यक्रम हो जाता है। पूरे देश भर में, 8 लाख से ज्यादा बूथों पर करोड़ों कार्यकर्ता पूरे हर्षोल्लास के साथ इस उत्सव में शामिल हो रहे हैं। आज के दिन लगभग 15 हजार मंडलों में भाजपा कार्यकर्त्ता एकत्र होकर एक साथ पार्टी की स्थापना दिवस मना रहे हैं, जिस प्रकार हम सब मिलकर दिल्ली के राजेन्द्र मंडल में स्थापना दिवस मना रहे हैं।

कई आज का दिन बेहद महत्वपूर्ण है और आज के दिन उन लोगों को याद करना हमलोगों के लिए परम कर्तव्य है जिन्होंने भारतीय जनसंघ काल से, जब हमारा दीया का निशान होता था, उस समय से जनसंघ के कार्यों को शुरु किया और आगे बढ़ाया। उस समय हमलोग दीया जलाकर चलते थे, बाद में हमने कमल खिलाया। हमलोगों ने एक लंबी यात्रा पूरी की है और अपने आप को इसमें खपाया है। आज उन लोगों को याद और नमन करने का दिन है, जिन्होंने स्वयं कुछ पाया नहीं, किन्तु संगठन को

मजबूत करने के लिए अपना सर्वश्व लगा दिया। इसलिए पार्टी के राष्टीय अध्यक्ष के रुप में आज करोड़ों कार्यकर्ताओं के साथ उन लोगों को, जिन्होंने पार्टी को सींच कर इतना बड़ा किया है, मैं आपकी ओर से और अपनी ओर से उनको नमन करता हूं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करता हूं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पार्टी की राजनैतिक यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि पिछले 42 वर्षों में भाजपा ने एक लम्बी यात्रा तय की है, बहुत सारे उतार–चढ़ाव देखे हैं। बहुत गर्मियां देखीं और सर्दियां सही हैं। बहुत वसंत देखे और बहुत सावन भी। एक समय ऐसा भी था, जब संसद में हमारे दो सदस्य हुआ करते थे। विपक्ष हमारा मजाक उड़ाते हुए कहते थे– हम दो और हमारे दो। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को गौरव बढ़ा हे और आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन चुकी है। 17 करोड़ से ज्यादा हमारे सदस्य हैं। 8.5 लाख से ज्यादा बूथ पर हमारी मजबूत उपस्थिति है और यह उपस्थिति देश में सभी 11 लाख बूथों तक पहुंचानी है।

श्री नड्डा ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व मे दो बार पूर्ण बहुमत के साथ केन्द्र में भाजपा की सरकार बनी है। आज 18 राज्यों में भाजपा या भाजपा गठबंधन की सरकारें हैं जिसमें 12 में विशुद्ध रूप से भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। कोई भी चुनाव हो, चाहे लोकसभा चुनाव हो, विधान सभा चुनाव हो या म्युनिसिपल चुनाव हो, भारतीय जनता पार्टी निरंतर जीत दर्ज करा रही है। जीत का यह क्रम आगे बढ़ाना है और इसे मजबूती प्रदान करनी है। दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी होने के साथ साथ एक चुनी हुई पार्टी के रूप में लोकसभा एवं विधान सभा में आगे बढ़ने के लिए हम अग्रसर हैं।

बहुत से प्रदेशों में हम विपक्ष में हैं, जहां हमारी लड़ाई पारिवारिक पार्टियों के साथ है। मैं मानता हूं कि पारिवारिक पार्टियां प्रजातंत्र और उसकी आत्मा के लिए खतरा है। आज हमें गर्व होना चाहिए कि आज भाजपा ही इकलौती पार्टी है जो इस चुनौती से देश को सजग कर रही है, सतर्क कर रही है। जहां तक राष्टवाद का सवाल है, हमारे दुश्मन भी जानते हैं कि राष्ट्रवाद से ओतप्रोत एकमात्र पार्टी भारतीय जनता पार्टी है। अन्य पार्टियां अपनों–परायों से, परिवार से जुड़ी हुई होने के कारण विचारधारा की पार्टियां नहीं रह गई हैं। उनके लिए राजनीति व्यक्तिगत स्वार्थ है और हमारे लिए राजनीति राष्टनीति है। भारतीय जनता पार्टी हमेशा इस बात को लेकर चलती है कि –

हम रहे ना रहे, देश बढ़े।

यह गर्व की बात है कि हमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के रुप में एक ऐसा नेतृत्व मिला है जो हमेशा पिछड़ों, दलितों, वंचितों, पीड़ितों, शोषितों, समाज के अंतिम पायदान पर रहने वाले व्यक्ति की चिंता करते हैं।

हम रहे ना रहे, विचारधारा बढ़े।
भारत आगे बढ़े।

श्री नड्डा ने कहा कि राष्ट्रवाद हमारे रग–रग में बह रहा है, यह बात हमारे विरोधी भी मानते हैं। विपक्षी पार्टियों ने जम्मू एवं कश्मीर में धारा 370 पर रास्ते बदले, विचार बदले, किन्तु भारतीय जनता पार्टी 1951 से कहती रही कि एक देश में दो निशान, दो विधान, दो प्रधान नहीं चलेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दृढ़ इच्छाशक्ति और गृहमंत्री अमित शाह जी की रणनीति ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया और एक देश में एक निशान, एक विधान और एक प्रधान के स्वप्न को साकार कर दिखाया है।

कि यह गर्व की बात है कि हमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के रुप में एक ऐसा नेतृत्व मिला है जो हमेशा पिछड़ों, दलितों, वंचितों, पीड़ितों, शोषितों, समाज के अंतिम पायदान पर रहने वाले व्यक्ति की चिंता करते हैं। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है कि वह अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और देखे कि उन्हें श्री नरेन्द्र मोदी सरकार की गरीब कल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिला है या नहीं। आयुष्मान भारत का लाभ मिला या नहीं, उन्हें स्वच्छता अभियान का लाभ मिला या नहीं, उनके घर में शौचालय बना या नहीं, उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत कच्चे मकान से छूटकारा मिला या नहीं, उनको पक्के मकान मिला या नहीं, नल से जल योजना के तहत उनके घर में नल लगा या नहीं, यदि नल लग गया है तो उसमें जल मिल रहा है या नहीं मिल रहा है – इस बात की चिंता भाजपा कार्यकर्ताओं को करनी पड़ेगी। यह हमारा काम है, यह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का दायित्व है।

हम संकल्प लें कि भाई–भतीजावाद की राजनीति का मुंहतोड़ जवाब देते हुए सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूलमंत्र को लेकर आगे बढ़ने का काम करेंगे।

कि आज हमारी पार्टी के 42 साल हुए हैं, इस अवसर पर हम संकल्प लें कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता तब तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक गरीबों की गरीबी नहीं हट जाए, उनका सशक्तिकरण न हो जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उन्हें सशक्त करने की जो योजनाएं बनाई हैं, उन योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाने का काम हमें करना होगा। हमें संकल्प लेना है कि जो प्राइवेट लिमिटेड पार्टियां हैं, जो अपने परिवार के बाहर कुछ देखती ही नहीं, जिनका स्वार्थ सिर्फ परिवार के लिए है, उन्हें उनके घर बिठाना है और जो लोग समाज सेवा के साथ आगे बढ़ता है, उन्हें आगे बढ़ाना है। हमलोग राजनीति की संस्कृति बदलने वाले लोग हैं। हम संकल्प लें कि भाई–भतीजावाद की राजनीति का मुंहतोड़ जवाब देते हुए सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूलमंत्र को लेकर आगे बढ़ने का काम करेंगे।

अन्त्योदय से राष्ट्रोदय का सुपथ

साधक राजकुमार

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष मे, भारतीय राजनीति में अपनी कार्यकर्ता, कार्य, कार्यपद्धति, क्रियाशीलता से दुनिया के सबसे बड़े राजनैतिक दल का गौरव प्राप्त भारतीय जनता पार्टी अपना 42वाँ स्थापना दिवस मनायी। पहली बार वर्चुअल माध्यम से देश के अधिकांश बूथों पर एक साथ कार्यकर्ताओं ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प सम्बोधन से अपने को जोड़ा । कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक बार स्थापना दिवस पर भौगोलिक, सांस्कृतिक रूप से एकात्मता के सूत्र में बंघकर एक ही तिथि, एक समय में उत्सव को मनाया तो भारतीय राष्ट्रवाद का नवीनतम राजनीतिक इतिहास बना। देश के सबसे बड़े प्रदेश उत्तर प्रदेश में ये कर्यक्रम अद्भुत रहा। भारतीय जनता पार्टी के 42वें स्थापना दिवस पर पूरे प्रदेश में पार्टी कार्यकर्ताओं ने ध्वज फहराकर शोभा यात्रा निकाली और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के संबोधन को सुना। भाजपा के स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी के राज्य मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी व प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह जी ने पार्टी का ध्वज फहराया। इस अवसर पर पार्टी पदाधिकारी, राज्य सरकार के मंत्रीगण सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

योगी आदित्यनाथ जी व प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह जी के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने शोभा यात्रा भी निकाली। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी व प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश महामंत्री अनूप गुप्ता ने किया।

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य राजधानी लखनऊ के पूर्व मंडल–2 और प्रदेश महामंत्री संगठन श्री सुनील बंसल उत्तर मंडल–5 में पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। जबकि प्रदेश भर में स्थापना दिवस पर हुए कार्यक्रमों में राज्य सरकार के मंत्रीगण सांसद, विधायक सहित अन्य पार्टी पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के 42वें स्थापना दिवस पर प्रत्येक नागरिक की जन आंकाक्षाओं पर खरा उतरने के लिए हमको प्रत्येक दिन नई परीक्षा के लिए खुद को तैयार करना होगा। जनता से किये गये वादों को संकल्प के रूप में आगे बढ़ाना होगा। इससे पहले सीएम योगी आदित्यनाथ ने देश भर के कार्यकर्ताओं को ट्विट कर बधाई दी। उन्होंने अपने ट्विट में लिखा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के निर्देषन में भाजपा द्वारा मनाया जा रहा सामाजिक न्याय पखवाड़ा समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होगा ऐसा मुझे विश्वास है। उन्होंने अपने दूसरे ट्विट में लिखा है है कि अंत्योदय से राष्ट्रोदय के सुपथ पर गतिषील भारतीय जनता पार्टी द्वारा 07–20 अप्रैल 2022 तक पूरे देष में सामाजिक न्याय पखवाड़ा मनाने का निर्णय अभिनंदनीय है। निरूसंदेह यह निर्धन, वंचित, षोषित, दलित और पिछड़े वर्ग के सषक्तिकरण हेतु भाजपा की प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। उन्होंने एक ट्विट में लिखा है कि लोकतांत्रिक व राष्ट्रीय मूल्यों के विशालतम राजनीतिक संगठन भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस की सभी

प्रतिबद्ध एवं समर्पित कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेष अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, कैबिनेट मंत्री बेबीरानी मौर्य, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नितिन अग्रवाल, डा. अरूण सक्सेना, कपिदेल अग्रवाल, नरेंद्र कश्यप, सोमेन्द्र तोमर सहित सहयोगी मंत्रियों, पूर्वमंत्रियों, महापौर, प्रदेष महामंत्री गोविन्द नारायण षुक्ल, अनूप गुप्ता, प्रदेश मंत्री अर्चना मिश्रा, शंकर लोधी सहित भाजपा के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को सीएम ने बधाई दी। इस दौरान सीएम ने कहा कि आज 42वां स्थापना दिवस का कार्यक्रम पूरे देश में हो रहा है। हम सब के लिए गौरव का विषय है कि भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस कार्यक्रम नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेष के अंदर अभी भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ है। हम सब जानते हैं 2017 में 14 वर्ष के वनवास के बाद भारतीय जन पार्टी की वापसी हुई। 2017 में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में पीएम मोदी जी की आवाहन पर भाजपा को अपना समर्थन दिया था। पिछले पांच वर्ष के दौरान सरकार और संगठन ने बेहतरीन समन्वय करते हुए प्रदेष के अंदर बिना किसी भेदभाव के गांव, गरीब, किसान, नौजवान, महिलाएं समाज के प्रत्येक तबके लिए जो काम किये। जिसके चलते विधानसभा चुनाव में उत्तर प्रदेष की जनता ने दो–तिहाई बहुमत से भाजपा के नेतृत्व में प्रदेष में सरकार का गठन किया।

उन्होंने कहा कि इस दौरान उत्तर प्रदेष ने अनेक मॉडल दिये। चाहे उत्तर प्रदेष के अंदर साढ़े 43 लाख गरीबों को आवास उपलब्ध कराने का काम रहा हो। चाहे वो दो करोड़ 61 लाख गरीबों को एक–एक षौचालय उपलब्ध कराने का काम रहा हो, 15 करोड़ प्रदेष के गरीबों के लिए महीने में दो बार डबल डोज राषन उपलब्ध कराने का काम हो। या फिर 5 लाख नौजवानों को सरकारी नौकरी उपलब्ध कराने काम हो। पूरी ईमानदारी के साथ इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का काम भारतीय जनता पार्टी ने किया है। इसी लिए आज जब हम लोग फिर अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए इस जनादेष के साथ जब हम 42वां स्थापना दिवस का कार्यक्रम मना रहे हैं।

सीएम योगी ने कहा चुनाव के पूर्व हम सबने लोक कल्याण संकल्प पत्र जारी किया था। इस संकल्प पत्र को मंत्र मानकर के उसके एक एक षब्द को मंत्र मानकर उनपर खरा उतरना, उनको अंगीकार करना। जनता से किये गये वादे को एक संकल्प के रूप में व्रत के रूप में हमें आगे बढ़ना होगा। इस विश्वास के साथ प्रदेष भर के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं। पार्टी के संस्थापक ष्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी बाजपेई समेत उन सब महापुरुषाओं को नमन करते हुए पार्टी के यषस्वी नेतृत्व के मार्गदर्शन में उन जन अपेक्षाओं पर खरा उतारने का काम करेगा जो उत्तर प्रदेष की 25 करोड़ जनता भारतीय जनता के प्रति व्यक्त करती है।

सीएम योगी ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े राजनैतिक दल भारतीय जनता पार्टी के प्रति हम सबका जुड़ाव हम सबको न केवल अपनी राष्ट्रनिष्ठा बल्कि समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक सुविधा पहुंचाने के लिए प्रेरित करता है। दुनिया के ऐसे सबसे बड़े राजनैतिक दल के साथ हम सभी जुड़कर के अपने जीवन के सेवा के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस की 42वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रदेष भर के कोटि कोटि कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं। भारतीय जनता पार्टी की यात्रा देष और दुनिया के राजनैतिक विषलेषकों के लिए कौतूहल और आष्चर्य का विषय है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति हम सब की निष्ठा, अपने मूल्यों और आदर्षों के प्रति हमारे समर्पण का भाव और समाज के अंतिम व्यक्ति तक बैठे व्यक्ति तक योजनाओं को पहुंचाना ध्येय। उस ध्येय को प्राप्त करने के लिए जब हम सब एकजुट होकर काम करते हैं तो वह प्रत्येक नागरिक को स्वतरू भाव के साथ जोड़ने में सफल होता है। आज भारतीय जनता पार्टी अपने यषस्वी नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के नेतृत्व में दुनिया के सबसे बड़े राजनैतिक दल के रूप में स्थापित हुई है। दुनिया के सामने लोकतंत्र के प्रति आम जन मानस के मन में भी आस्था का भाव पैदा कर रही है।

योगी ने कहा कि याद करिये भारतीय जनता पार्टी अनेक उतार चढ़ाव की यात्रा को आगे बढ़ाते हुए कार्य की है। 1952 में जब पहला आम चुनाव इस देष के अंदर होता है तब भारतीय जनसंघ की स्थापना होती है। भारतीय जनसंघ के पीछे का उद्देष्य भी यही थी हमें सत्ता की राजनीति नहीं बल्कि हमें भारत के प्रति समर्पण का भाव पैदा करने वाले लोगों को एक राजनैतिक दल के रूप में आगे बढ़ाने का काम करना है। उस समय जब तत्कालीन सत्ताधारी दल भारत की अखंडता के साथ खिलवाड़ कर रहा था, कश्मीर को भारत से अलग करने की साजिष कर रहा था। उस स्थापना काल से भी बलिदान देने की आवष्यकता पड़ी तो भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कष्मीर के लिए अपने आप को बलिदान कर दिया था। आजादी के बाद देष के अंदर सबसे बड़ा सांस्कृतिक आंदोलन राम जन्म भूमि के प्रति भारतीय जनता पार्टी के समर्पण पर कोई संदेष नहीं कर सकता है।

1980 में फिर से जनता पार्टी से अलग होकर नई यात्रा षुरू करने की बात हुई तो वो तिथि 6 अप्रैल 1980 थी। जब भारतीय जनता पार्टी के रूप में इस दल का गठन होता है। उस समय श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेई, लाल कृष्ण आडवानी और भारतीय जनता पार्टी के उस समय के उन सभी महापुरुषओं ने इस नए दल को देष की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने के रूप स्थापित करने का जो संकल्प लिया था। आज आप देख रहे होंगे कि भारत के कोटि कोटि नागरिकों की आस्था का केन्द्र बिन्दु भारतीय जनता पार्टी बना हुआ है। दुनिया के अंदर आष्चर्य और कौतूहल का विषय भी बना है। प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी के नेतृत्व में जब 2014 में केन्द्र में सरकार बनी। कोई सोचता था देष के अंदर व्यापक जनसमर्थन को जोड़ने में कामयाब होगी और जन भावनाआं का जो सपना पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने देखा था आज वो सपना साकार हो रहा है। सीएम योगी ने कहा कि देष के अंदर इस सदी की सबसे बड़ी महामारी में दौरान 80 करोड़ लोगों को फ्री में राषन की सुविधा उपलब्ध कराने का काम केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया। 135 करोड़ लोगों के जीवन को कैसे बचाया जाना चाहिये, देष और दुनिया ने देखा है। फ्री में टेस्ट, फ्री में उपचार फ्री में वैक्सीन। 185 करोड़ वैक्सीन की डोजेज फ्री में देष के अंदर उपलब्ध कराई जा चुकी है। कोई सरकार फ्री में अपने लोगों को वैक्सीन नहीं दे रही है सिवाय भारत सरकार के। पहली बार हुआ बीमारी से कम से कम मौते हुईं। हरेक जीवन की रक्षा का भरपूर प्रयास हुआ। फ्री में राषन उपलब्ध कराने का काम आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए उठाए गये कदम।

यह आज नए भारत की नई तस्वीर प्रस्तुत करता है।पहली बार लोगों ने देखा कैसे 12 करोड़ लोगों के घर में शौचालय बनते है, गरीबों के 03 करोड़ आवास बनते हैं।
कोरोना कालखंड में ही नहीं 2014 में पहली बार देष ने देखा कि कैसे 12 करोड़ लोगों के घर में षौचालय। तीन करोड़ लोगों के आवास बनते हैं। करोड़ों नौजवानों के रोजगार के लिए प्रधानमंत्री मुद्रा योजना हो। 12 करोड़ किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान निधि योजना से कर्ज से मुक्त करने के लिए, कैसे आयुषमान भारत योजना के अंदर 6 करोड़ गरीब परिवारों को को फ्री में स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाता है। यह पहली बार हुआ है जब अत्योदय समाज के अंतिम व्यक्ति तक जाति देखकर नहीं योजनाओं का लाभ उस तक पहुंचाने का काम भारतीय जनता पार्टी यषस्वती नेतृत्व की ओर से किया जा रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर कैसे हमें अपने दोस्त के साथ व्यवहार करना है और कैसा व्यवहार दुष्मन के साथ करना है पहली बार देष के नेतृत्व की क्षमता के माध्यम से देखा। सीएम योगी ने कहा कि केन्द्र की सरकार हो या फिर प्रदेषों की सरकारें हों। प्रत्येक नागरिक की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते राष्ट्र का हित पार्टी के लिए सर्वोपरि है। इस भाव का एक मात्र राजनैतिक दल भाजपा है। प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने पार्टी के स्थापना दिवस पर कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए कहा कि आज से 42वर्ष पूर्व 6 अप्रैल 1980 को उस पवित्र संगठन भाजपा की नींव रखी गई थी जिसका एक ही लक्ष्य रहा अन्त्योदय अर्थात पंक्ति के अन्तिम व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा में जोड़ना। यह हम सभी के लिए अत्यंत ही सौभाग्य का विषय है कि हम विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल के कार्यकर्ता है। उन्होंने कहा कि हमारी विचारधारा, सिद्धान्त, कार्यपद्धति एवं कार्यकर्ताओं के कारण ही हमारा संगठन ना कभी झुका है और ना कभी कोई झुका पाया है। अपने स्थापना काल से ही पार्टी ने बहुत से उतार–चढ़ाव का सामना किया। भाजपा के खिलाफ बहुत से षड़यंत्र हुए लेकिन हमारे संगठन का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। विचारधारा के लिए हमारे पूर्वजों डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय तथा अनेकों कार्यकर्ताओं को बलिदान देना पड़ा। आज पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं के विचार, संस्कार, संघर्ष और परिश्रम की पराकाष्ठा का ही परिणाम है कि पार्टी अपनी श्रेष्ठता की ओर लगातार अग्रसर है। श्रद्धेय अटल जी, आदरणीय मोदी जी, आदरणीय अमित शाह जी, आदरणीय नड्डा जी और आदरणीय योगी जी का नेतृत्व हम लोंगो को मिला है। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र निर्माण को समर्पित है। भाजपा अपने गठन के समय से ही सिद्धान्तों और आदर्शों पर लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप चलती आई है। यह किसी एक परिवार, वंश, वर्ग या जाति की पार्टी नहीं है। अन्य दलों की आत्मा उनके नेता है जबकि भाजपा की आत्मा कार्यकर्ता है। भाजपा में ही संभव है कि एक गरीब परिवार में जन्में माननीय नरेंद्र मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बन सकते है और अपने परिश्रम और निष्ठा से एक बूथ अध्यक्ष माननीय अमित शाह जी राष्ट्रीय अध्यक्ष व देश के गृहमंत्री बन सकते है। विद्यार्थी परिषद के एक सामान्य कार्यकर्ता माननीय नड्डा जी राष्ट्रीय अध्यक्ष बन सकते है और एक सन्यासी माननीय योगी जी प्रदेश के मुख्यमंत्री बन सकते है।

यह समर्पण और देशभक्ति का भाव किसी और पार्टी में देखने को कभी नहीं मिल सकता क्योंकि भाजपा ''पार्टी नहीं परिवार है संस्थान नहीं संस्कार है''। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल जी का ''एकात्म मानववाद और अंत्योदय का सिद्धान्त पार्टी का मूल दर्शन है। माननीय मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकारें अन्त्योदय के संकल्प के साथ काम कर रही है। भाजपा के कार्यकर्ताओं के लिए सबसे पहले देश और उसके बाद दल है। गरीब, दलित, शोषित, वंचित, आदिवासी व किसान ईश्वर के सामान है। यही भाजपा का सामाजिक एवं मानव धर्म है। भाजपा का संकल्प है कि हर व्यक्ति के सर पर छत हो, भाजपा का संकल्प है कि हर व्यक्ति की रसोई में गैस कनेक्शन हो, भाजपा का संकल्प है कि हर व्यक्ति के नल में जल हो, भाजपा का संकल्प है कि हर व्यक्ति के आवास में शौचालय हो, भाजपा का संकल्प है कि हर व्यक्ति को सस्ती दवाएं व इलाज उपलब्ध हो। आज इन संकल्पों को सिद्धि में बदलते हम सब देख रहे है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लिए राजनीति सत्ता का सुख भोगने का साधन नहीं है बल्कि भाजपा के लिए राजनीति सेवा का एक माध्यम है।
इसी क्रम में संगठन संचालन के लिए सभी कार्यकर्ताओं से 5/– से 1000/– रू0 तक का माइक्रो डोनेशन कार्यक्रम का भी शुभारम्भ हुआ।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बनाम नागरिक राष्ट्रवाद

डॉ. सरवन सिंह बघेल

बहुत लम्बे समय से भारत में नागरिक राष्ट्रवाद का सिद्धांत स्थापित किये जाने का प्रयास किया जाता रहा है। लेकिन पिछले कुछ समय से नागरिक राष्ट्रवाद के विरूद्ध एक नयी बहस की शुरुआत हुई है जिसमें भारत के मूल और प्राचीन सिद्धांत सांस्कृतिक राष्ट्रावाद की उपलब्धता को आज आम भारतीय नागरिक के मध्य महसूस किया जा सकता है। धार्मिक और राष्ट्रीयता से जुड़े नागरिकों बहुलता आज सांस्कृतिक राष्ट्र्वाद के पक्ष में देखी जा सकती है। यह समूह किसी एक धर्म और सम्प्रदायें को मानने वाला नही है। यह एक गुलदस्तें के समान है जिसमें तरह तरह के मत और सम्प्रदायें के लोग जुड़कर इसकी खूबसूरती और मजबूती को बड़ा रहें है। पहले सांस्कृहतिक राष्ट्रेवाद को छुआछूत जैसा समझा जाता था, आज भारत का अधिसंख्य नागरिक सांस्कृनतिक राष्ट्रहवाद का समर्थक है। नागरिक राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक राष्ट्रदवाद को लेकर आज राजनीतिक क्षेत्र में भी सरगर्मी का माहौल व्यापत है। कुछ दल नागरिक राष्ट्रवाद को लेकर अपने विचार का प्रसार चाहते है और कुछ सांस्कृौतिक राष्ट्रावाद को ही अपनी विचारधारा का अंग मानते है। इन दोनों विचारों की आड़ में चुनावी बहुमत प्राप्त करने का यह सीधा–सरल तरीका अपनाया जाने लगा है। बीतें विधानसभा और लोकसभा चुनावों में इसका प्रभाव देखने को मिलने लगा है। नेतागण भी अपने भाषणों में अपने अपने विचारों का पुरजोर समर्थन करते दिखाई देते है। शिक्षा संस्थान भी इन वाद विवादों से अछूते नही है। अब भारतीय सिनेमा भी इन विचारों की वैचारिक लड़ाई दिखने लगी है। मगर सवाल फिर भी यही उठता है कि दोनों विचारों में भारत और भारतीयों की जरुरत क्या है? क्या हमें दूसरे के विचारों से प्रेरित नागरिक राष्ट्रवाद को भारत और भारतीयता का हिस्सा बनाना चाहिए या पुरातन काल से चले आ रहें एकात्म और समानता के भाव से प्रेरित राष्ट्र की साकार परिकल्पना के परिचायक सांस्कृातिक राष्ट्रावाद को भारत और भारत के नागरिकों की जीवनशैली का हिस्सा बनाने पर तेजी से कार्य करना चाहियें। हम लोकतन्त्र का हिस्सा है और संविधान के मानने वाले तो हमें अधिकार है कि हम अपनी सुविधानुसार अपने विचार का चुनाव कर सकते है कि हमें किस वाद या विचार का हिस्सा बनना है। मगर हम यहाँ यह फैसला करने से पूर्व दोनों वादों और विचारों पर एक अध्ययन कर लेते है क्योकि यहाँ श्रेष्ठता और निम्नता की बात नही यहाँ राष्ट्रीयता की बात है। यहाँ भारत के भविष्य की बात है। तो हम कोई यहाँ चूक नही कर सकते क्योंकि यहाँ अस्तित्व की भी बात है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद प्राचीन काल से ही भारत वर्ष के जनमन में बसा है। समय–समय पर दवाबों के कारण यह कमजोर जरूर दिखाई दिया लेकिन,यह कभी मरा नहीं। कई इतिहासकारों ने ब्रिटिश इतिहासकारों के इस मत का भी खंडन किया कि राष्ट्रवाद भारत वासियों को अंग्रेजों की देन है। भारत की संस्कृति ही राष्ट्रवाद पर आधारित रही है। संस्कृत साहित्य में यह जीवित रहा। धार्मिक और सामाजिक विचारकों ने इसे समय–समय पर नया जीवन प्रदान किया। यह सच है कि कतिपय पश्चिमी विचारकों ने भारतीय राष्ट्रवाद को आधुनिक काल में प्रभावित किया लेकिन, हमारी राष्ट्रभक्ति, हमारा राष्ट्रवाद मूल रूप से भारतीय ही रहा है। आधुनिक काल में राष्ट्रवाद के वाहक भारत के आम लोग बने। उन्होंने राष्ट्रवाद को जीवित रखने और उसे नया प्रारूप देने में एक अहम भूमिका निभाई है और आज भी निभा रहे हैं।

इस संदर्भ से परे भी यह देखा जाना आवश्यक है कि राष्ट्रवाद सांस्कृतिक है या नागरिक? यहाँ यह पूछा जाना चाहिए है कि राष्ट्र ने संविधान बनाया है या संविधान ने राष्ट्र को अपनाया और अधिनियमित किया है ? दूसरे शब्दों में, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे उदार मूल्यों से उत्पन्न उत्साह के कारण राष्ट्रवाद की भावनात्मक ऊर्जा सक्रिय है या एक राष्ट्र शुरू से ही अपने जीवन में इन आदर्शों को आत्मसात किए रहता है? राष्ट्रवाद के लिए सांस्कृतिक मूल्यों और नागरिक को आधार बनाया जाना ही उचित मालूम होता है। दोनों ही इसकी धुरी है। यह कहना कि भारत का राष्ट्रवाद सांस्कृतिक नहीं है,

भारत की राष्ट्रीयता को नकारना और एक भौगोलिक अभिव्यक्ति से इसे बस थोड़ा ही ऊपर मानना है। अंग्रेजों ने ऐसा किया था, क्योंकि वे भारत के राष्ट्रीय जागरण को धता बताना चाहते थे। राष्ट्र को राष्ट्र–राज्य से परे रखने के लिए, आज भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को नकारा जा रहा है, और इसे किसी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक आधार के मात्र राजनीतिक निकाय बनाने पर जोर दिया जा रहा है। परन्तु यह भारत की आत्मा है।

भारत में भाषाओं, सामाजिक रीति–रिवाजों और धार्मिक प्रथाओं की बहुलता का अर्थ यह नहीं है कि सांस्कृतिक निरंतरता का धागा, इन विविधताओं के माध्यम से हिमालय से महासागरों तक और सिंधु घाटी सभ्यता से आज तक भारत में नहीं चल रहा है। सवाल यह है कि क्यों कुछ लोगों को इसकी विविधता की विरासत में संजोयी एकता नहीं दिखती। इसका कारण शायद यह है कि भारत में ये विरोधाभासी विचार, न केवल जीवन और धार्मिक प्रथाओं से जुड़े हैं, बल्कि ये सह अस्तित्व एकेश्वरवादी सोच से भी परे हैं। परमात्मा को स्वीकार करने और उस तक संपर्क बनाने के तरीकों में सह–अस्तित्व की जीवंतता सबसे अधिक है। उपनिषद में एक स्थान पर **'एकम् सत् विप्र बहुदा वदंती'** कहा गया है, अर्थात् सत्य एक है, लेकिन विद्वजन इसे विभिन्न नामों से बुलाते हैं। भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को नकारने के पीछे एक बड़ा कारण है। मुस्लिम विजताओं ने धार्मिक और नस्लीय श्रेष्ठता पर शासन करने के अपने अधिकार को आधार बनाया था। स्थानीय संस्कृति के साथ हुई इस्लाम की मिलावट को नकारात्मक रूप में देखा गया। माना गया कि ऐसी मिलावट विजेताओं की शक्ति को कमजोर करने के साथ ही इस्लाम की शुद्धता से भी समझौता करेगी। यही कारण है कि इस्लाम अपनाने वाले भारतीयों से भी उम्मीद की जाती थी कि वे अपनी पुश्तैनी संस्कृति को त्याग दें।

इस बीच प्रश्न उठना चाहिए कि क्या मुसलमान भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को हिंदू राष्ट्रवाद के रूप में ही देखेंगे? जबकि उन्होंने गंगा–जमुनी तहजीब के सतही दिखावे से परे भारत की संस्कृति को पहचाना था। भारत को उसके अपने प्रतिमान में देखा जाना चाहिए। किसी बाहरी धार्मिक नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए। सांस्कृतिक के बजाय नागरिक राष्ट्रवाद पर जोर दिया जाना, दारूल अहद या दारूल अमन की अवधारणा का प्रतिबिंब है – एक देश जहां मुसलमान शांति से रहते हैं और पूर्ण नागरिक अधिकारों के साथ रहते हैं। इस बात पर बल देते हुए यह भुला दिया गया कि इस प्रकार के देश को गैर–राजनीतिक होना चाहिए, जिसमें राजनीतिक सत्ता पर किसी समूह विशेष का दावा न हो। मुसलमानों को भारत को पूरी तरह से अपना घर मानने के लिए, विश्वास और अपनेपन के बीच स्व–निर्मित चश्में को छोडना होगा। अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पुनर्जीवित करने के लिए पहचान की बुतपरस्ती, हिंदू संस्कृति में मिल जाने के भय और स्वयं निर्मित अलगाव के बहाव को समाप्त करना होगा।

सवाल तो यह है कि राष्ट्र सबका है। हर समाज का है। राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को सभी समाज के सभी वर्ग संजोएं तो इससे किसी को भी नुकसान नहीं होगा। इसकों हमें राजनीतिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास करना चाहियें। वरष्ठि पत्रकार उमेश चतुर्वेदी को लगता है कि लोकल चुनाव में तो नहीं कह सकते, लेकिन भाजपा को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से फायदा हो रहा है और होता रहेगा। वे कहते हैं, 'आज के समय से इससे बहुत ज्यादा फायदा नहीं होने वाला है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि राज्य के लिए जरूरी क्या है। भूमि, लोग और संप्रभुता, ये तीन चीजें राज्यि के लिए जरूरी हैं। 1947 से पहले के भारत में संप्रभुता तो नहीं थी। राज्या अलग थे, उनके राजा अलग थे, लेकिन हम एक थे तो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की वजह से ही। ऐसे यह तो स्पष्ट है कि भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद नया नहीं है। मोदी और योगी युग हिंदुत्व का जागरण काल है। 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अब हिंदुत्वा का राष्ट्रवाद हो गया है, काफी हद तक। ये काम आती हैं और काम आ भी रही हैं। यह भी समझना होगा कि ये नैरेटिव भी कांग्रेस ने ही स्थापित किया, हालांकि तब ये राजनीतिक लाभ के लिए नहीं था। 80 के दशक में इंदिरा गांधी जब रुद्राक्ष की माला पहनती थीं तो वह आस्थामय था, आज जब राहुल गांधी जनेऊ पहनते हैं तो वह राजनीतिक फायदे के लिए है। सोनिया गांधी की कांग्रेस ने धर्म को कट्टरता में बदलने की कोशिष की है। अखिलेश यादव ने धर्म की परिभाषा ही बदल दी। शाहबानों के बाद जो शुरू हुआ, भाजपा ने उसका फायदा उठाया। ऐसे में इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि जब भी इस तरह की बात होगी, उससे फायदा बस भाजपा को होगा।

कुल मिलाकर, विपरीत पक्षों के सुझाव या निंदा करने वाले ट्वीट और ऐतिहासिक अर्थों पर वाद–विवाद किया जाना, कोई नई बात नहीं है, और न ही यह बुरा है। वरन यह एक विविधतापूर्ण लोकतंत्र के उबड–खाबड और उथल–पुथल मार्ग का हिस्सा है। इतिहास के अर्थों पर बहस, चर्चा या विवाद होना एक स्वस्थ जीवन का संकेत है। सत्ताधारी राजनीतिक दल अपने नायकों, मिश्रित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को बढ़ावा देता है। लेकिन अपने मत से मतदाताओं को प्रभावित करते हुए सत्ता की तलाश करना लोकतंत्र की परिभाषित विशेषताओं में से एक है। इन सबके बीच कुछ लाल रेखाएं भी हैं, जिनका इस प्रकार के वाद–विवाद में सम्मान किया जाना चाहिए। अन्यथा ये तथाकथित सांस्कृतिक युद्ध केवल राजनीति की अभिव्यक्ति मात्र रह जाते हैं। उम्मीद की जा सकती है कि देश के राजनीतिक दल, इस प्रकार के स्वस्थ वाद–विवादों से लोकतंत्र की आत्मा की रक्षा करते रहेंगे। सांस्कातिक राष्ट्रवाद बनाम नागरिक राष्ट्रवाद की परिकल्पना में हर भारतीय अपने विचार और विवेक से अपनी राह चुनेगा कि उसे किस राष्ट्रवाद का हिस्सा रहना है।

भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर

ललित गर्ग

जन्मभूमि : महू, मध्य प्रदेश

दीक्षाभूमि : नागपुर

चैत्य भूमि : मुंबई

महापरिनिर्वाण भूमि : नेशनल मेमोरियल, दिल्ली

शिक्षाभूमि : डॉक्टर अंबेडकर मेमोरियल, लंदन

बाबा साहेब के नाम से दुनियाभर में लोकप्रिय डॉ. भीमराव आम्बेडकर समाज सुधारक, दलित राजनेता, महामनीषी, क्रांतिकारी योद्धा, लोकनायक, विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजसेवी एवं धैर्यवान व्यक्तित्व होने के साथ ही विश्व स्तर के विधिवेत्ता व भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार थे। डॉ. आंबेडकर विलक्षण एवं अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, उनके व्यक्तित्व में स्मरण शक्ति की प्रखरता, बुद्धिमत्ता, ईमानदारी, सच्चाई, नियमितता, दृढ़ता, प्रचंड संग्रामी स्वभाव का मणिकांचन मेल था। वे अनन्य कोटि के नेता थे, जिन्होंने अपना समस्त जीवन समग्र भारत की कल्याण–कामना, संतुलित समाज रचना में उत्सर्ग कर दिया। खासकर भारत के अस्सी प्रतिशत दलित सामाजिक व आर्थिक तौर से अभिशप्त थे, उन्हें इस अभिशाप से मुक्ति दिलाना ही डॉ. आंबेडकर का जीवन संकल्प था। वे भारतीय राजनीति की एक धुरी की तरह थे, जो आज दुनियाभर के लिये एक अत्यंत महत्वपूर्ण दलित मसीहा एवं संतुलित समाज संरचना के प्रेरक महामानव हैं।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू में एक गरीब अस्पृश्य परिवार में हुआ था। भीमराव आम्बेडकर रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की 14वीं सन्तान थे। उनका परिवार मराठी था जो महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले मे स्थित अम्बावडे नगर से सम्बंधित था। उनके बचपन का नाम रामजी सकपाल था। वे हिंदू महार जाति के थे जो अछूत कहे जाते थे। उनकी जाति के साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव किया जाता था। एक अस्पृश्य परिवार में जन्म लेने के कारण उनको अपना बचपन कष्टों में बिताना पड़ा। संघर्ष एवं कष्टों की आग में तपकर उन्होंने न केवल स्वयं का विकास किया वरन भारत के समग्र विकास का वातावरण निर्मित किया। वे नई मानव सभ्यता एवं संस्कृति के प्रेरक एवं पोषक थे। वे हमारे युग के महानतम नायक थे, उनके क्रियाकलापों में किंचित मात्र भी स्वार्थ नहीं था।

मानव जाति के इतिहास में कभी कोई ऐसा युग नहीं गुजरा, जब किसी ने अपने तर्क, कर्म एवं बुद्धि के बल पर तत्कालीन रूढ़िवादी मान्यताओं, जातीय भेदभाव एवं ऊंच–नीच की धारणाओं पर कड़ा प्रहार न किया हो। मनुष्य सदैव सत्य की तलाश में निरन्तर प्रयासरत रहा है और उनको नेतृत्व देने के लिये डॉ. आम्बेडकर जैसे व्यक्तित्व भी प्रकट होते रहे हैं। भारत के लोग कभी इतने भयंकर दौर से नहीं गुजरे, जैसे वे स्वतंत्रता संग्राम के समय गुजरे। वे अपने आपको नितांत बेबस, असहाय

श्री दिनेश प्रताप सिंह
श्री अनूप गुप्ता
श्री अशोक अग्रवाल
श्री जितेन्द्र सिंह सेंगर
श्री के0पी0 श्रीवास्तव
श्री प्रांशु दत्त द्विवेदी
श्रीमती वंदना मुदित वर्मा
श्री सी.पी. चंद्र
श्री अविनाश चौहान
श्रीमती प्रज्ञा त्रिपाठी
श्री बृजेश सिंह
श्री विशाल सिंह चंचल
श्री अवधेश सिंह
श्री अंगद कुमार सिंह
श्री पवन सिंह
श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह
श्री ऋषिपाल सिंह
श्री आशीष यादव
श्री वागीश पाठक
श्री विनीत सिंह
श्री नरेन्द्र भाटी
श्री सुधीर गुप्ता
श्री रविशंकर सिंह
डॉ0 रतन पाल सिंह
श्री हरिओम पांडे
श्री सुभाष यदुवंश
श्री रामचंद्र प्रधान
श्री ओम प्रकाश सिंह
श्री सत्यपाल सिंह
श्री धर्मेन्द्र भारद्वाज
श्री विजय शिवहरे
श्री कुंवर महाराज सिंह
श्रीमती रमा निरंजन

और आस्था विहीन महसूस कर रहे थे। गुलामी की मानसिकता एवं पहले से चली आ रही जातीय भेदभाव एवं ऊंच–नीच की विभीषिकाओं ने उनकी मानसिकता कुंठित कर दी और वे अपने आपको दिशाविहीन समझ रहे थे, ऐसे दौर में डॉ. अम्बेडकर एक रोशनी बन कर प्रकट हुए। उनके नेतृत्व में धन सम्पन्न एवं ऊंची जाति के लोगों द्वारा बड़ी क्रूरता से अपने पैरों तले रौंदा हुआ दलित एवं मजदूर वर्ग समूचे भारत में संगठित होकर एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा।

डॉ. अम्बेडकर के पिता भारतीय सेना की महू छावनी में सूबेदार के पद पर रहे थे। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ने और कड़ी मेहनत करने के लिये हमेशा प्रोत्साहित किया। अपने भाइयों और बहनों में केवल अम्बेडकर ही स्कूल की परीक्षा में सफल हुए और इसके बाद बड़े स्कूल में जाने में सफल हुये। अपने एक ब्राह्मण शिक्षक महादेव अम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे, उनके कहने पर आम्बेडकर ने अपने नाम से सकपाल हटाकर अम्बेडकर जोड़ लिया। अत्याचार और लांछन की तेज धूप में टुकड़ा भर बादल की तरह भीम के लिए वे शीतल छांव एवं छुआछूत, ऊंच–नीच एवं जातीय भेदभाव को समाप्त करने के लिये अग्निताप की तरह महान् क्रांतिकारी पोषक थे। सन् 1927 में डॉ. अम्बेडकर ने छुआछूत के खिलाफ एक व्यापक आंदोलन शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने सार्वजनिक आन्दोलनों और जुलूसों के द्वारा पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी लोगों के लिये खुलवाने के साथ ही अछूतों को भी हिंदू मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष किया। बाबा साहब वर्गहीन समाज गढ़ने से पहले समाज को जातिविहीन करना चाहते थे। उनका मानना था कि समाजवाद के बिना दलित–मेहनती इंसानों की आर्थिक मुक्ति संभव नहीं। डॉ. अंम्बेडकर की रणभेरी गूंज उठी और उसका स्वर था कि समाज को श्रेणीविहीन और वर्णविहीन करना होगा क्योंकि श्रेणी ने इंसान को दरिद्र और वर्ण ने इंसान को दलित बना दिया। जिनके पास कुछ भी नहीं है, वे लोग दरिद्र माने गए और जो लोग कुछ भी नहीं है वे दलित समझे जाते थे। बाबा साहेब ने व्यापक संघर्ष करते हुए आह्वान किया कि छीने हुए अधिकार भीख में नहीं मिलते, अधिकार वसूल करना होता है।

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने भीमराव अंम्बेडकर को मेधावी छात्र के नाते छात्रवृत्ति देकर 1913 में विदेश में उच्च शिक्षा के लिए भेज दिया। उन्होंने अमेरिका में कोलंबिया विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान, दर्शन और अर्थ नीति का गहन अध्ययन किया। वहां पर भारतीय समाज का अभिशाप और जन्मसूत्र से प्राप्त अस्पृश्यता की कालिख नहीं थी। इसलिए उन्होंने अमेरिका में एक नई दुनिया के दर्शन किए। डॉ. अम्बेडकर ने अमेरिका में एक सेमिनार में **'भारतीय जाति विभाजन'** पर अपना मशहूर शोध–पत्र पढ़ा, जिसमें उनके व्यक्तित्व की सर्वत्र प्रशंसा हुई।

डॉ. अम्बेडकर विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कीं तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे। अपनी आर्थिक जरूरतों के लिये जीवन के आरम्भिक भाग में वे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की। उनके भीतर अंगड़ाई ले रहे राष्ट्रीय व्यक्तित्व ने उन्हें राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय कर दिया और तब अम्बेडकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए। उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं को न केवल प्रकाशित किया, वरन् उनमें क्रांतिकारी लेखनी से समाज को झकझोरा, राजनीतिक अधिकारों और दलितों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत और भारत के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ. अम्बेडकर धार्मिक विचारों के व्यक्तित्व थे, सन् 1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया। डॉ. अम्बेडकर की बढ़ती लोकप्रियता और जन समर्थन के चलते उनको 1931 में लंदन में आयोजित दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। 1936 में उन्होंने स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की जो 1937 में केन्द्रीय विधान सभा चुनावों में 15 सीटें जीतने में सफल रही। उन्होंने अपनी पुस्तक **'जाति के विनाश'** भी 1937 में प्रकाशित की जो उनके न्यूयॉर्क में लिखे एक शोधपत्र पर आधारित थी। इस लोकप्रिय पुस्तक में आम्बेडकर ने हिंदू धार्मिक नेताओं और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की थी। उन्होंने अस्पृश्य समुदाय के लोगों को गांधीजी द्वारा रचित शब्द हरिजन पुकारने के कांग्रेस के फैसले की भी कड़ी निंदा की थी। वे सच्चे अर्थों में एक महान क्रांतिकारी युगपुरुष थे, जिनके जीवन का सार है कि क्रांति लोगों के लिये होती है, न कि लोग क्रांति के लिये होते हैं।

जब 15 अगस्त 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार बनी तो उसमें डॉ. अम्बेडकर को देश का पहला कानून मंत्री नियुक्त किया गया। 29 अगस्त 1947 को डॉ. अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। डॉ. अम्बेडकर ने मसौदा तैयार करने के काम में सभी की प्रशंसा अर्जित की। 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया। 1951 में संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने केन्द्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था। इस मसौदे में उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी थी। डॉ. अम्बेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे और कश्मीर के मामले में धारा 370 का विरोध करते थे। 1990 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भारत रत्न'** से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। डॉ. अंबेडकर मधुमेह से पीड़ित थे। 6 दिसंबर 1956 को उनकी मृत्यु दिल्ली में नींद के दौरान उनके घर में हो गई।

सामाजिक न्याय और अंत्योदय पथ पर भाजपा

अरुण कान्त त्रिपाठी

पूर्व में जनसंघ और अब भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को अपना प्रेरणाबिंदु मानता है। संघ विचार इस देश का मूल देशज विचार है। इसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अखंड विश्व की कल्पना एक कुटुम्ब के रूप में है। सभी के कल्याण का विचार जिसमें निहित है। जहाँ बुद्ध और बाबा साहब आंबेडकर ने समतामूलक समाज की स्थापना का विचार दिया, तो वहीं महात्मा गांधी के ग्रामसुराज की संकल्पना भी है। यह संकल्पना ही 1980 में मुंबई में भारतीय जनता पार्टी के रूप में निकलकर हमारे सामने आती है। जिसके वर्तमान स्वरूप में सबका साथ–सबका विकास और सबका विश्वास एक मूलमंत्र बनकर उभरा है।

भारतीय जनता पार्टी की स्थापना मुंबई के उस "समता नगर" में हुई जहां मुंबई के बड़े दलित नेता और पार्टी के मुंबई सचिव "दत्ता जी राव शिंदे" के द्वारा भूमि–पूजन से की गई। जिस पार्टी की स्थापना समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के कर–कमलों द्वारा हो उस दल का क्या उदेश्य हो सकता है, ये सहज ही ज्ञात होता है। इसीलिए तत्कालीन भाजपा में राम स्वरूप विद्यार्थी, कलका दास, सूरज भान, सत्यनारायण जटिया, स्वरूप चाँद राजन जी जैसे दलित नेता पार्टी के बनते ही राष्ट्रीय फलक पर उभर कर आये थे। तब से आज तक की यात्रा में भाजपा का जो वर्तमान स्वरूप निखर कर आया है वह समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने की ललक के रूप में परिभाषित हो रहा है। समाजिक न्याय के फलक को छूने की चाहत में भाजपा राजनीति के शिखर पर एक ऐसे देदीप्यमान दल के रूप में अवतरित हो रही है जिसमें समाज के सभी गणक आकर स्वलीन हो रहे है। इसे समझने के लिये किसी को बहुत दूर तक जाने की जरूरत नहीं है अपितु भारत में वर्तमान में संपन्न हुये आम चुनावों के विश्लेषण में देख जा सकता है। भाजपा समाज के अंतिम पायदान पर खड़े अंतिम व्यक्ति की ताक बनकर उभरी है। भाजपा को मिलने वाले सकल वोट में समाज के अंतिम पायदान पर मौजूद उन तमाम लोगों की ताकत मिल रही है जहां से भाजपा एक विराट लक्ष्य की ओर जाती दृष्टिगत हो रही है।

दरअसल, भाजपा ने हाल ही में संपन्न हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में शानदार सफलता हासिल की है। उत्तर प्रदेश में इतिहास रचते हुए उसने तमाम विपरीत समीकरणों के बीच भी दोबारा सत्ता में आने का करिश्मा दिखाया है। पार्टी को यह सफलता केवल इसलिए हासिल हुई है क्योंकि भाजपा ने उच्च जातियों के साथ–साथ ओबीसी और दलित जातियों के बीच अपनी पैठ मजबूत बनाने में सफल रही है। आगरा जैसे दलित बाहुल्य वाले क्षेत्र में भाजपा सभी विधानसभा सीटें जीतने में कामयाब हो रही है। तब यह समझना आसान हो जाता है कि यह केवल तभी संभव हो सकता था जबकि समाज के अंतिम स्तर पर खडा समुदाय उसके साथ खड़ा हो। यह करके भाजपा ने दिखाया है।

2014 से लेकर 2022 तक के चुनाव परिणाम और मत प्रतिशत भी इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि समाज के हर वर्ग में भाजपा के समर्थक हैं, जो अपने जाति–धर्म की परंपरागत सोच से ऊपर उठकर उसका समर्थन कर रहे हैं। भाजपा चाहती है कि, इन वोटरों का समर्थन उसके लिए आगे भी जारी रहे, लिहाजा पार्टी संगठन और सरकार में पर्याप्त प्रतिनिधित्व देकर उनकी भावनाओं को संतुष्ट करने की कोशिश की जा रही है।

जातिवाद का लंबा असर

देश में भाजपा के समाजिक उदय के साथ ही यह समझने की बात है कि जातीय सोच इस देश में धार्मिक उन्माद से ज्यादा स्थाई रही है। विकास, अर्थ, राष्ट्र आदि मुद्दे के बी भी लोग जातीय सोच पर आ जाते हैं और उसी सामाजिक सोच के अनुसार व्यवहार करने लगते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण राम मंदिर आंदोलन के रूप में है। नरेन्द्र मोदी सरकार के प्रयत्नों से अयोध्या में जैसे ही राम मंदिर निर्माण शुरू हुआ, लोगों की दृष्टि में यह राजनीतिक मुद्दा नहीं रह गया जो कि पहले भी नहीं था लेकिन, तमाम राजनीतिक विश्लेषक इसको इसी तरह से प्रस्तुत करते रहे। आज चुनाव के बाद वर्तमान

दौर में जो धार्मिक कट्टरता बढ़ती दिख रही है वह बदलते समय में यह खत्म हो सकती है। उस परिस्थिति में भाजपा दूसरे दलों को दरकिनार करके अपने उस सरोकार को पूरा करने जा रही है जिसको सामाजिक न्याय जैसी बेहतर सोच कहा जाता है। पार्टी उसी दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है।

भाजपा की राजनीतिक यात्रा इस बात की गवाह है कि सामजिक सरोकारों के पथ पर आगे आने से उसकी ध्येय यात्रा लगातार परिवर्तन के पथ पर बढ़ रही है। आज भाजपा को कोई भी विश्लेषक केवल उच्च जातियों और बनियों की पार्टी कहने से गुरेज करता है क्योंकि भाजपा की राजनीति में उसको 56 प्रतिशत दलित, अन्य पिछड़ा वर्ग की समर्थन प्राप्त हो रहा है। यह राजनीति की वह सीमा है जहां से भाजपा की विचार यात्रा लगातार पुष्पित पल्लवित हो रही है। भाजपा को समाज के हर वर्ग के समर्थन भारतीय राजनीति में नया इतिहास बन रहा है। कश्मीर से सुदूर पूर्व तक भाजपा एक प्लेटफार्म पर मजबूती से खड़ी है। दक्षिण भारत में भाजपा की पैठ लगातार बढ़ रही है। चुनाव–दर–चुनाव भाजपा का ग्राफ बढ़ रहा है। ओबीसी–दलित जातियों के के समर्थन से ही भाजपा ने 2014, 2017 और 2019 व 2022 में करिश्माई सफलता हासिल की है। यदि इस आधार को और अधिक मजबूत बनाया जा सके, तो भाजपा की राजनीति को ज्यादा समय तक स्थायित्व मिल सकता है। जिसके लिये पूरी पार्टी एकजुट होकर आगे बढ रही है। पार्टी बहुत सोच–समझकर अपना हर कदम और हर अभियान आगे बढ़ा रही है।

भारत के विपक्षी दल सदैव इस बात का आरोप लगाते रहे हैं कि भाजपा का मातृ संगठन आरएसएस देश को हिंदू राष्ट्र बनाने की रणनीति पर काम कर रहा है। अगर हम इसको आरोप भी मान लें तब भी भाजपा का यह अभियान तब तक सफल नहीं हो सकता है जब तक कि देशभर में अंतिम पायदान पर खड़े एक बडे तबके का कुनबा उसके साथ नहीं संबद्ध नहीं हो जाता है। माना जा सकता है कि अपने इसी प्रयास को भाजपा धीरे–धीरे समाज के सभी वर्गों को साथ लाने की कोशिश कर रहा है।

यहां पर ध्यान देने की बात है कि, राजनीतिक विश्लेषक यूपी को यह कहकर बदनाम करते थे कि यूपी में जाति ही चलती है। 2014, 2017, 2019 और अब 2022 हर बार उत्तर प्रदेश की जनता ने सिर्फ विकासवाद की राजनीति को ही चुना है। उत्तर प्रदेश के हर नागरिक ने ये सबक दिया है कि जाति की गरिमा, जाति का मान, देश को जोड़ने के लिए होना चाहिए, तोड़ने के लिए नहीं। मतदाताओं ने इतना ही नहीं सरकारी योजनाओं को गरीबों तक पहुंचाने में बीजेपी की कामयाबी की भी चर्चा की।

तीन प्रमुख विचार

यूपी की राजनीति पहले जातिवाद पर चलती थी. अब वो दौर बीजेपी ने खत्म कर दिया है। अब विकासवाद चल रहा है।

विकास और सरकारी योजनाओं का लाभ आम लोगों और गरीबों तक पहुंचाने की बीजेपी की नीति सफल रही है।

जाति की राजनीति और विकास तथा कामकाज की राजनीति दो परस्पर विरोधी बातें हैं।

इसलिये जब चुनावों के दौरान प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि "भ्रष्टाचार जिनके जीन का हिस्सा हो वह सामाजिक न्याय की लड़ाई नहीं लड़ सकते। सामाजिक न्याय यही है बिना भेदभाव के समाज के प्रत्येक तबके को शासन की योजना का लाभ मिले, उनके साथ सामाजिक और आर्थिक भेदभाव न हो" तब उनके इस बात को समर्थन प्रदेश की 19 करोड़ जनता ने किया है। उनके इस समर्थन ने भाजपा की सामाजिक यात्रा को विजय की यात्रा करार दिया है।

भाजपा का यह सुफल ओबीसी दलित जातियों को साथ लेकर अपने एक राष्ट्र एक भाव के पथ पर आगे बढ़ कर देश को मजबूत बनाने का है। यह मशाल अब समाज के अंतिम व्यक्ति के हाथ में थमाने की कोशिश को पूरा करने की है। इस रणनीति पर आगे बढ़ने के लिए भाजपा के 42वें स्थापना दिवस से अच्छा दिन और नहीं हो सकता था।

पार्टी के सामाजिक न्याय अभियान के गहरे निहितार्थ को अब नयसे भारत के परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। अगर इसको पुराने दृष्टिकोण से किसी ने समझने की भूल की तो यह मान लेना चाहिये कि वह भाजपा के मर्म को नहीं नहीं समझ सका है। इसीलिए जिस मंत्र को लेकर पूरा संघ चला उस विचार को फलीभूत करने का कार्य जनसंघ से लेकर आज की वर्तमान भाजपा और सरकार कर रही है। सबका साथ, सबका विकास यह मंत्र लेकर समाज में अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को विकास की योजना के केंद्र में रखने वाली नीति पर सरकार ने कार्य किया है। वह ही विचार भारत का विचार है, जिसमें सभी को साथ लेकर चलना और उनका विकास करना शामिल है।

(लेखक कमल ज्योति के संपादक और चुनाव प्रबंधन के प्रदेश संयोजक हैं)

महात्मा ज्योतिबा फुले

भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा था उस समय आजादी के आन्दोलन के साथ–साथ समाज सुधार के भी आन्दोलन तेज थे। निर्धन तथा निर्बल लोगों को न्याय दिलाने के लिए ''सत्यशोधक समाज की 1873 में सीापना किया, उन्हें महात्मा की उपाधि मिली थी। वर्तमान में उ0प्र0 सरकार ने ज्योतिबा के सपनों को साकार करते हुए अनेक योजनाएं मिशन शक्ति के नाम से चला रही है। जिसमें ज्योतिबा फुले श्रमिक, कन्यादान योजना ने अनेक परिवारों को सम्बल दिया है।महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 18वी। सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरूतियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछुतोद्वार, नारी–शिक्षा, विधवा – विवाह और किसानो के हित के लिए ज्योतिबा ने जो कार्य किये वो आज भी सामाजिक परिवर्तन आन्दोलन में मिल के पत्थर है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। उनका परिवार बेहद गरीब था और जीवन–यापन के लिए बाग़–बगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन – पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया। 7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया।

जातिगत भेद–भाव के कारण उन्हें वि।ालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलु कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास–पड़ोस के बुजुर्गो से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे।

स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए ज्योतिबा ने 1848 में एक स्कूल खोला। यह इस काम के लिए देश में पहला विद्यालय था।

लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री को इस योग्य बना दिया। उच्च वर्ग के लोगों ने आरंभ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की, किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाब डालकर पति–पत्नी को घर से निकालवा दिया इससे कुछ समय के लिए उनका काम रुका अवश्य, पर शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए।

पेशवाई के अस्त के बाद अंग्रेजी हुकूमत की वजह से हुये बदलाव के इ।स। 1840 के बाद दृश्य स्वरूप आया। हिंदू समाज के सामाजिक रूढी, परंपरा के खिलाफ बहोत से सुधारक आवाज उठाने लगे। इन सुधारको ने स्त्री शिक्षण, विधवा विवाह, पुनर्विवाह, संमतीवय, बालविवाह आदी। सामाजिक विषयो पर लोगों को जगाने की कोशिष की। लेकीन उन्नीसवी सदिके ये सुधारक **'हिंदू परंपरा'** के वर्ग में अपनी भूमिका रखते थे। और समाजसुधारणा की कोशिश करते थे।

महात्मा जोतिराव फुले इन्होंने भारत के इस सामाजिक आंदोलन से महराष्ट्र में नई दिशा दी। उन्होंने वर्णसंस्था और जातीसंस्था ये शोषण की व्यवस्था है और जब तक इनका पूरी तरह से ख़त्म नहीं होता तब तक एक समाज की निर्मिती असंभव है ऐसी स्पष्ट भूमिका रखी। ऐसी भूमिका लेनेवाले वो पहले भारतीय थे। जातीव्यवस्था निर्मूलन के कल्पना और आंदोलन के उसी वजह से वो जनक साबीत हुये।

महात्मा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ने के बाद 1848 में उन्होंने पुणे में लडकियों के लिए भारत की पहली प्रशाला खोली। 24 सितंबर 1873को उन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना की। वह इस संस्था के पहले कार्यकारी व्यवस्थापक तथा कोषपाल भी थे। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज में शुद्रो पर हो रहे शोषण तथा दुर्व्यवहार पर अंकुश लगाना था।

महात्मा फुले अंग्रेजी राज के बारे में एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे अंग्रेजी राज की वजह से भारत में न्याय और सामाजिक समानता के नए बिज बोए जा रहे थे । महात्मा फुले ने अपने जीवन में हमेशा बड़ी ही प्रबलता तथा तीव्रता से विधवा विवाह की वकालत की । उन्होंने उच्च जाती की विधवाओ के लिए 1854 में एक घर भी बनवाया था। दुसरो के सामने आदर्श रखने के लिए उन्होंने अपने खुद के घर के दरवाजे सभी जाती तथा वर्गो के लोगो के लिए हमेशा खुले रखे।

ज्योतिबा मैट्रिक पास थे और उनके घर वाले चाहते थे कि वो अच्छे वेतन पर सरकारी कर्मचारी बन जाए लेकिन ज्योतिबा ने अपना सारा जीवन दलितों की सेवा में बिताने का निश्चय किया था। उन दिनों में स्त्रियों की स्तिथि बहुत खराब थी क्योंक घर के कामो तक ही उनका दायरा था। बचपन में शादी हो जाने के कारण स्त्रियों के पढने लिखने का तो सवाल ही पैदा नही होता था। दुर्भाग्य से अगर कोई बचपन में ही विधवा हो जाती थी तो उसके साथ बड़ा अन्याय होता था। तब उन्होंने सोचा कि यदि भावी पीढ़ी का निर्माण करने वाली माताए ही अंधकार में डूबी रहेगी तो देश का क्या होगा और उन्होंने माताओं के पढने पर जोर दिया था।

ज्योतिबा यह जानते थे कि देश व समाज की वास्तविक उन्नति तब तक नहीं हो सकती, जब तक देश का बच्चा–बच्चा जाति–पांति के बन्धनों से मुक्त नहीं हो पाता, साथ ही देश की नारियां समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार नहीं पा लेतीं । उन्होंने तत्कालीन समय में भारतीय नवयुवकों का आवाहन किया कि वे देश, समाज, संस्कृति को सामाजिक बुराइयों तथा अशिक्षा से मुक्त करें और एक स्वस्थ, सुन्दर सुदृढ़ समाज का निर्माण करें । मनुष्य के लिए समाज सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है । इससे अच्छी ईश्वर सेवा कोई नहीं । महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार के पिता समझे जाने वाले महात्मा फूले ने आजीवन सामाजिक सुधार हेतु कार्य किया । वे पढ़ने–लिखने को कुलीन लोगों की बपौती नहीं मानते थे । मानव–मानव के बीच का भेद उन्हें असहनीय लगता था ।

दलितों और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने 'सत्यशोधक समाज' स्थापित किया। उनकी समाजसेवा देखकर 1888 ई। में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी। ज्योतिबा ने ब्राह्मण–पुरोहित के बिना ही विवाह–संस्कार आरंभ कराया और इसे मुंबई हाईकोर्ट से भी मान्यता मिली। वे बाल–विवाह विरोधी और विधवा–विवाह के समर्थक थे। वे लोकमान्य के प्रशंसकों में थे।

इनका सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य महिलाओं की शिक्षा के लिये था; और इनकी पहली अनुयायी खुद इनकी पत्नी थी जो हमेशा अपने सपनों को बाँटती थी तथा पूरे जीवन भर उनका साथ दिया।

अपनी कल्पनाओं और आकांक्षाओं के एक न्याय संगत और एक समान समाज बनाने के लिये 1848 में ज्योतिबा ने लड़कियों के लिये एक स्कूल खोला। ये देश का पहला लड़कियों के लिये वि ।ालय था। उनकी पत्नी सावित्रीबाई वहाँ अध्यापान का कार्य करती थी। लेकिन लड़कियों को शिक्षित करने के प्रयास में, एक उच्च असोचनीय घटना हुई उस समय, ज्योतिबा को अपना घर छोड़ने के लिये मजबूर किया गया। हालाँकि इस तरह के दबाव और धमकियों के बावजूद भी वो अपने लक्ष्य से नहीं भटके और सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लड़ते रहे और इसके खिलाफ लोगों में चेतना फैलाते रहे।

1851 में इन्होंने बड़ा और बेहतर स्कूल शुरु किया जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। वहाँ जाति, धर्म तथा पंथ के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था और उसके दरवाजे सभी के लिये खुले थे।

ज्योतिबा फुले बाल विवाह के खिलाफ थे साथ ही विधवा विवाह के समर्थक भी थे; वे ऐसी महिलाओं से बहुत सहानुभूति रखते थे जो शोषण का शिकार हुई हो या किसी कारणवश परेशान हो इसलिये उन्होंने ऐसी महिलाओं के लिये अपने घर के दरवाजे खुले रखे थे जहाँ उनकी देखभाल हो सके।

ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले के कोई संतान नहीं थी इसलिए उन्होंने एक विधवा के बच्चे को गोद लिया था । यह बच्चा बड़ा होकर एक क्वबजवत बना और इसने भी अपने माता पिता के समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाया । मानवता की भलाई के लिए किये गए ज्योतिबा के इन निश्वार्थ कार्यों के कारण डंल 1988 में उस समय के एक और महान समाज सुधारक "राव बहादुर विट्ठलराव कृष्णाजी वान्देकर" ने उन्हें "महात्मा" की उपाधी प्रदान की । श्रनसल 1988 में उन्हें लकवे का ।जजंबा आ गया । जिसकी वजह से उनका शरीर कमजोर होता जा रहा था लेकिन उनका जोश और मन कभी कमजोर नही हुआ था।

27 नवम्बर 1890 को उन्होंने अपने सभी हितैषियो को बुलाया और कहा कि "अब मेरे जाने का समय आ गया है, मैंने जीवन में जिन जिन कार्यो को हाथ में लिया है उसे पूरा किया है, मेरी पत्नी सावित्री ने हरदम परछाई की तरह मेरा साथ दिया है और मेरा पुत्र यशवंत अभी छोटा है और मै इन दोनों को आपके हवाले करता हूँ ।" इतना कहते ही उनकी आँखों से आसू आ गये और उनकी पत्नी ने उन्हें सम्भाला । 28 नवम्बर 1890 को ज्योतिबा फुले ने देह त्याग दिया और एक महान समाजसेवी इस दुनिया से विदा हो गया ।

सुशासन की विजय यात्रा

उत्तर प्रदेश विधान परिषद चुनावो में भारतीय जनता पार्टी को ऐतिहासिक विजय श्री मिली इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सभी विजयी उम्मीदवारों को बहुत–बहुत बधाई दिया उन्होंने कहा कि यह जीत एक बार फिर भाजपा के विकास मॉडल पर जनता जनार्दन के विश्वास की अभिव्यक्ति है। योगी आदित्यनाथ जी की सरकार के साथ ही पार्टी संगठन से जुड़े सभी कार्याकर्ताओं को शुभकामनायें'' इस विजय से भाजपा विधान परिषद में प्रभावी हो गयी है।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद के 27 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों के द्विवार्षिक निर्वाचन–2022 की मतगणना आज 12 अप्रैल, 2022 को सकुशल सम्पन्न हो गई है। भारत निर्वाचन आयोग की अनुमति के पश्चात उक्त निर्वाचन क्षेत्रों के परिणाम घोषित कर दिये गये हैं। 27 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों में से 24 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी, 02 सीटों पर निर्दलीय तथा 01 सीट पर जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के उम्मीदवार विजयी घोषित किये गये हैं।

क्र.सं.	निर्वाचन क्षेत्र का नाम	निर्वाचित सदस्य का नाम	सम्बद्ध दल का नाम
1	मुरादाबाद–बिजनौर स्थानीय प्राधिकारी	श्री सत्यपाल सिंह	भाजपा
2	रामपुर–बरेली स्थानीय प्राधिकारी	श्री कुँवर महाराज सिंह	भाजपा
3	पीलीभीत–शाहजहांपुर स्थानीय प्राधिकारी	डा0 सुधीर गुप्ता	भाजपा
4	सीतापुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री पवन कुमार सिंह	भाजपा
5	लखनऊ–उन्नाव स्थानीय प्राधिकारी	श्री राम चन्द्र प्रधान	भाजपा
6	रायबरेली स्थानीय प्राधिकारी	श्री दिनेश प्रताप सिंह	भाजपा
7	प्रतापगढ़ स्थानीय प्राधिकारी	श्री अक्षय प्रताप सिंह	जनसत्ता दल लोकतांत्रिक
8	सुल्तानपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह	भाजपा
9	बाराबंकी स्थानीय प्राधिकारी	श्री अंगद कुमार सिंह	भाजपा

10	बहराइच स्थानीय प्राधिकारी	श्रीमती प्रज्ञा त्रिपाठी	भाजपा
11	गोण्डा स्थानीय प्राधिकारी	श्री अवधेश कुमार सिंह	भाजपा
12	फैजाबाद स्थानीय प्राधिकारी	श्री हरि ओम पाण्डेय	भाजपा
13	बस्ती–सिद्धार्थनगर स्थानीय प्राधिकारी	श्री सुभाषचन्द्र उर्फ सुभाष यदुवंश	भाजपा
14	गोरखपुर–महराजगंज स्थानीय प्राधिकारी	श्री सी0 पी0 चन्द	भाजपा
15	देवरिया स्थानीय प्राधिकारी	डॉ0 रतन पाल सिंह	भाजपा
16	आजमगढ़–मऊ स्थानीय प्राधिकारी	श्री विक्रान्त सिंह उर्फ रिशु	निर्दलीय
17	बलिया स्थानीय प्राधिकारी,	श्री रविशंकर सिंह ''पप्पू भैया''	भाजपा
18	गाजीपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री विशाल सिंह ''चंचल''	भाजपा
19	जौनपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री बृजेश कुमार सिंह 'प्रिन्सू'	भाजपा
20	वाराणसी स्थानीय प्राधिकारी	श्रीमती अन्नपूर्णा सिंह	निर्दलीय
21	इलाहाबाद स्थानीय प्राधिकारी	डॉ0 के0पी0 श्रीवास्तव	भाजपा
22	झांसी–जालौन–ललितपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्रीमती रमा निरंजन	भाजपा
23	कानपुर–फतेहपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री अविनाश सिंह चौहान	भाजपा
24	इटावा–फर्रुखाबाद स्थानीय प्राधिकारी	श्री प्रॉशु दत्त द्विवेदी	भाजपा
25	आगरा–फिरोजाबाद स्थानीय प्राधिकारी	श्री विजय शिवहरे	भाजपा
26	मेरठ–गाजियाबाद स्थानीय प्राधिकारी	श्री धर्मेन्द्र कुमार भारद्वाज	भाजपा
27	मुजफ्फरनगर–सहारनपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्रीमती वन्दना वर्मा	भाजपा

प्रदेश के 35 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों से 36 सदस्य चुने जाते हैं। 34 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों से 01–01 तथा मथुरा–एटा–मैनपुरी निर्वाचन क्षेत्र से 02 सदस्य चुने जाते हैं।

प्रदेश के 35 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों में से 08 निर्वाचन क्षेत्रों से भारतीय जनता पार्टी के 09 सदस्य निर्विरोध निर्वाचित घोषित किये जा चुके थे। इस प्रकार 35 स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्रों के 36 सदस्यों में से भारतीय जनता पार्टी के कुल 33, निर्दलीय 02 तथा 01 सदस्य जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के निर्वाचित हुए हैं।

क्र0सं0	निर्वाचन क्षेत्र का नाम	निर्वाचित सदस्य का नाम	सम्बद्ध दल का नाम
1	बदायूं स्थानीय प्राधिकारी	श्री वागीश पाठक	भाजपा
2	हरदोई स्थानीय प्राधिकारी	श्री अशोक कुमार	भाजपा
3	खीरी स्थानीय प्राधिकारी	श्री अनूप कुमार गुप्ता	भाजपा
4	मिर्जापुर–सोनभद्र स्थानीय प्राधिकारी	श्री श्याम नरायन सिंह	भाजपा
5	बांदा–हमीरपुर स्थानीय प्राधिकारी	श्री जितेन्द्र सिंह सेंगर	भाजपा
6	मथुरा–एटा–मैनपुरी स्थानीय प्राधिकारी	श्री आशीष कुमार यादव	भाजपा
7	मथुरा–एटा–मैनपुरी स्थानीय प्राधिकारी	श्री ओम प्रकाश	भाजपा
8	अलीगढ़ स्थानीय प्राधिकारी	श्री ऋषिपाल सिंह	भाजपा
9	बुलन्दशहर स्थानीय प्राधिकारी	श्री नरेन्द्र सिंह भाटी	भाजपा

रोजगार सृजन प्रदेश सरकार की प्राथमिकता

व्यायसायिक सुगमता (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) एवं रोजगार सृजन प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी भी देश के विकास के लिए यह जरूरी है कि वहॉं विदेशी निवेश की मात्रा अधिक हो। विदेशी निवेश तभी हासिल हो पाता है जब कोई भी देश अपने विभिन्न उत्पादों को अन्तर्राश्ट्रीय स्तर के मानकों, गुणवत्ता में अच्छा परफार्म करते हुए खरा उतरे। इस क्षेत्र में सबसे बड़ा मानक ''ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'' यानी कारोबार में आसानी हो। इसका सीधा सा अर्थ होता है कि देश में कारोबार नियमों और अन्य प्रशासनिक कार्यों में सरलता लाना है। देश के मा0 प्रधानमंत्री जी की नीति है कि देश के उद्यमियों को विभिन्न क्षेत्रों में उद्योग स्थापित हो और उनके मानक एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादों को राश्ट्रीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर पहचान बने। देश की उत्पादित वस्तुओं का निर्यात किया जाय। जिससे देश समृद्धशाली बने।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने ''ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'' में सरलता लाते हुए अनेक क्षेत्रों में रिकार्ड 186 सुधारों को लागू किया है। राज्य सरकार ने श्रम विनियमन में सुधार लाते हुए उद्यमियों, व्यापारियों एवं श्रमिकों को सहूलियत दी है। उसी तरह उद्योगों, व्यापार की निरीक्षण के नियम बनाये गये हैं। उद्योग लगाने के लिए भूमि आवंटन में वरीयता दी गई है। उद्योगों के स्थल व अन्य सम्पत्तियों के पंजीकरण मैकेनिज्म में सरलता लाई गई है। व्यापारियों उद्यमों को पर्यावरण की स्वीकृति देने तथा कर भुगतान में सुगमता लाते हुए आसान बनाया गया है। प्रदेश सरकार ने विभिन्न उद्यमों व्यापार में जारी होने वाले लाइसेंस से सम्बन्धित गतिविधियों, नियमों, आवेदन पत्रों एवं उनकी प्रक्रियाओं की नियमित समीक्षा करने संबंधी कार्यों में सुगमता लाया है। किसी भी कार्य के लिए जारी होने वाली स्वीकृतियों को ऑनलाइन करते हुए समयबद्ध कर दिया गया है। जिससे संबंधित कार्य के लिए अनावश्यक देरी न हो।

प्रदेश सरकार ने प्रदेश के विकास एवं समृद्धि के लिए उद्योगों की स्थापना हेतु अनेक सुविधायें देने का कार्य किया है। उद्योगों एवं व्यापार के लिए सभी आवश्यक अवस्थापना सुविधायें दी जा रही है। प्रदेश सरकार सभी औद्योगिक सेवाओं/स्वीकृतियों/अनुमोदनों/अनुमतियों/लाइसेंस को ऑनलाइन तथा एक छत के नीचे प्रदान करने की व्यवस्था की है। इसके लिए ''सिंगल विन्डों क्लीयरेंस'' की नीति अपनाई गई है। इस नीति के अंतर्गत अन्तर्राश्ट्रीय मानकों का एक सिंगल विन्डों टेक्नोलॉजी पोर्टल विकसित किया गया है। राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रमुख सुधारों से भारत के सबसे बड़े उद्योग तथा विदेशों के सैमसंग जैसी बड़ी कम्पनियों के उद्योग प्रदेश में स्थापित हो रहे हैं। प्रदेश में उद्योगों की स्थापना से व्यापार कुशल व अकुशल श्रमिकों, शिक्षित व कौशल प्रशिक्षित युवकों को रोजगार भी मिल रहा है।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस एक तरह का इंडेक्स है। इसमें कारोबार सुगमता के लिए कई तरह के पैमाने रखे गये है। लेबर रेगुलेशन, सूचनाओं की विभिन्न जानकारियों तक पहुॅंच, कार्यों में पारदर्शिता, ऑनलाइन सिंगल विन्डो, निर्माण परमिट, भूमि प्रशासन वाणिज्यिक विवाद इत्यादि प्रक्रियाओं इसमें शामिल है। देश में इसे उद्योग एवं आन्तरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डी0पी0आई0टी0) द्वारा तैयार किया जाता है। विश्व बैंक के सहयोग से सभी राज्यों और संघ शासित प्रदेशों के लिए बिजनेस रिफार्म एक्शन प्लान के तहत सुधार संबंधित प्रक्रियाओं का सुझाव दिया जाता है। प्रदेश सरकार ने ''निवेश मित्र पोर्टल'' पर प्राप्त आवेदन पत्रों का 98 प्रतिशत से अधिक निस्तारण कर संबंधित उद्योग व्यापार के कार्य में तेजी लाई जिससे समय से लाखों विभिन्न कार्यों के आवेदन पत्रों का निपटारा होकर संबंधित उद्यम आरम्भ हुआ है। राज्य में निवेशकों के विनियामक भार को कम करने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा नवीनीकरण, निरीक्षण, रजिस्टर व रिकार्ड तथा रिटर्न फाइल करने के संदर्भ में लाइसेंस एवं अनापत्ति प्रमाणपत्रों को चिन्हित करने की कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए 20 से अधिक विभागों में सुधारों को लागू किया जा चुका है। भारत सरकार द्वारा वर्श 2019 में घोशित बिजनेस रिफार्म एक्शन प्लान रैकिंग में राज्यों की रैकिंग में उत्तर प्रदेश ने उल्लेखनीय प्रगति करते हुए देश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। प्रदेश में उद्योगों की स्थापना से प्रदेश की चतुर्दिक प्रगति हो रही है।

सशक्त किसान, समृद्ध प्रदेश

'केंद्र की मोदी और यूपी की योगी सरकार के ठोस कदमों से देश और प्रदेश में किसानों के अंदर नई आशा और उत्साह का संचार हुआ है। कोरोना संकट के बावजूद सीएम योगी के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश में कृषि विकास की गति नहीं थमी। आगे भी किसानों के हितों और उनके संवर्धन में कोई कमी नहीं आने देंगे' यह बातें उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने भाजपा के राज्य मुख्यालय पर मंगलवार की आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कहीं।

श्री सूर्य प्रताप शाही ने बताया कि प्रदेश में खेती का बजट 6 गुना तक बढ़ाया गया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत अब तक 2 करोड़ 55 लाख 77 हजार से अधिक किसानों के खाते में कुल 42,565 करोड़ रुपये हस्तांतरित की गई है। आपदा के वक्त भी योगी सरकार किसानों के दुख में उनके साथ खड़ी रही है। अब तक 29 लाख 42 हजार किसानों के खाते में 2947.76 करोड़ रु. क्षतिपूर्ति सीधे किसानों के खातों में हस्तांरित की गई है। 36 हजार करोड़ रु. से 86 लाख लघु एवं सीमांत किसानों की ऋण माफी की गई है। इन तमाम प्रयासों से किसानों की आत्महत्या को रोकने में सफलता मिली है।

उन्होंने ने बताया कि बीते पाँच साल के भीतर प्रदेश का कुल कृषि उत्पादन 619 लाख मी टन से अधिक पहुँच गया है। दलहन और तिलहन का भी उत्पाद बढ़ा है। समय पर खाद, बीज और पानी की व्यवस्था की है। गोरखपुर में खाद कारख़ाना शुरू किया गया है। हमने एम.एस.पी. में लगभग डेढ़ गुना से ज्यादा की वृद्धि की है। जहां धान के समर्थन मूल्य में वृद्धि 1940 रु. प्रति क्विंटल हुई वहीं गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1975 रुपये प्रति कुन्तल निर्धारित की गई। सपा सरकार के समय जहां 217 लाख मी टन खाद्यान्न की खरीद हुई थी। वहीं यूपी में अब तक 89 लाख 47 हजार किसानों से 500 लाख मी.टन खाद्यान्न क्रय कर रु. 90,419 करोड़ से अधिक का भुगतान किया गया है।

गन्ना किसानों को 1.68 लाख करोड़ से अधिक का भुगतान

कृषि मंत्री ने बताया कि पिछले 5 वर्ष में गन्ना किसानों को 1,68,905.38 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया है। जबकि, उससे पहले के 5 वर्ष (2012–17) में गन्ना किसानों को कुल 95 हजार करोड़ का भुगतान ही हुआ था। सरकार ने गन्ना के भुगतान में 25 रुपए प्रति कुंटल की वृद्धि की है। गन्ना किसानों का उत्साह, गन्ना खेती का क्षेत्रफल और उत्पादन बढ़ा है। नई चीनी मिलें खुली हैं, बंद चीनी मिलों को शुरू किया गया, कई चीनी मिलों की क्षमता बधाई गई है। इन सबके साथ प्रदेश ने रिकॉर्ड एथेनोल का उत्पादन भी किया है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश की 27 से अधिक मंडियों में कोल्ड चौम्बर और राइपेनिंग चौम्बर का निर्माण किया गया है। पीएम मोदी के निर्देश पर प्रदेश के किसानों खेती की विविधता को बढ़ावा देने, खेती की लागत कम करने और रासायनिक खादों के अंधाधुंध इस्तेमाल को रोकने के लिए 3.70 करोड़ से अधिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए हैं। इसके अलावा 1 करोड़ 66 लाख किसान क्रेडिट कार्ड वितरित किए गए हैं। द मिलियन फार्मर्स स्कूल' के माध्यम से 80 लाख से अधिक किसानों को प्रशिक्षण और संवाद कार्यक्रम से केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं को पहुंचाने का काम किया गया।

प्रदेश में सिंचाई के क्षेत्र में किए गए अभूतपूर्व कार्यों की तारीफ करते हुए शाही ने बताया कि पी.एम. कुसुम योजना में 26,400 से अधिक सोलर पम्प स्थापित किए गए। जिससे डेढ़ लाख हेक्टेयर सिंचाई क्षमता बढ़ी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं के पूर्ण होने से 20 लाख हेक्टेयर से अधिक सिंचाई क्षमता में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्तमान सरकार द्वारा परम्परागत कृषि विकास योजना के 500 से 1000 क्लस्टर बनाकर जैविक खेती कार्यक्रम संचालित किया जा रहा हैं।

नौजवान देश का वर्तमान भविष्य हैं: महाना

गुवाहाटी में आयोजित 8वें राष्ट्रमण्डल संसदीय प्रक्षेत्र सम्मेलन में बोलते हुए उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतीश महाना ने कहा कि नौजवान इस देश का वर्तमान और भविष्य है, जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है। आज हम सभी को उसी ओर चलने की आवश्यकता है।

मा0 अध्यक्ष ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का यह कथन कि हमारा देश युवा शक्ति का प्रतीक है, आज की वास्तविकता है। भारत के नौजवान देश में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में अपनी प्रतिभा और योग्यता के माध्यम से दुनिया को एक नयी दिशा दे रहे हैं। आज विश्व के जिन बड़े संस्थानों का नाम लिया जाता है उसमें भारत के नौजवान प्राथमिकता से अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

आज हम लोग आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं परन्तु अगले 25 वर्षो में हम अपनी आजादी का शताब्दी वर्ष मनायेंगे तो उसमें हमारे नौजवानों के लगन व परिश्रम की महक पूरे विश्व में होगी और भारत उस स्थान पर होगा, जिस स्थान पर विश्वगुरू की स्थापना होगी। भारत को विश्वगुरू का स्थान दिलाने में युवाओं का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। आज देश में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से नौजवानों को स्टैण्ड अप, स्टार्ट अप इण्डिया, अटल इनोवेशन मिशन, प्राइम मिनिस्टर फैलोशिप आदि अवसर उपलब्ध कराये गये हैं। आज देश में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अलग–अलग राज्य नौजवानों को आगे बढ़ाने के लिए अपनी योजनाएं बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग तकनीकी युग है और अलग–अलग क्षेत्रों में तकनीक का रूतबा बढ़ाने की विशेष आवश्यकता है।

श्री महाना ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की बात करते हुए कहा कि इस क्षेत्र को हम एनर्जी और क्लाइमेट के लिए उपयोग कर सकते हैं और हाईटेक इंफ्रास्ट्रक्चर में इसकी बहुत ही व्यापकता है। स्वामी विवेकानंद जी पर बात करते हुए कहा कि उनका संपूर्ण जीवन अपने आप में स्वयं एक जीवनशैली हैं। वे स्वयं में एक संस्था थे और 100 साल पहले उनके जो विचार थे वह आज भी हम सबके लिए प्रासंगिक है। उनकी एक बात को आज मैं दोबारा कहना चाहता हूँ कि हम आत्मनिर्भर नहीं होंगे तो हम अपनी मंजिल तक कैसे पहुंचेंगे।

श्री महाना ने मेक इण्डिया और मेक फॉर होल ऑफ द वर्ल्ड की बात करते हुए कहा कि इसके माध्यम से नौजवानों को एक और रास्ता मिला है। उन्होंने नयी शिक्षा नीति का भी उल्लेख करते हुए कहा कि इसके माध्यम से नयी पीढ़ी को तैयार करने की शुरूआत हुई है। ईज ऑफ डुइंग बिजनेस में सुधार आया है और अब ईज ऑफ लिविंग की बात हो रही है। आज युवा की सोच बदली है। वह चर्चा करता है कि हमारा देश पांच ट्रिलियन ईकोनॉमी तक कैसे पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि आज का नौजवान समस्या से दूर नहीं भागता बल्कि उसका एक नियमित समाधान निकालता है।

उन्होंने स्वामी विवेकानन्द जी की बात उठो, जागो और लक्ष्य की प्राप्ति की ओर चलते रहने की बात से सहमति व्यक्त करते हुए नौजवानों को जागृत करके उनको आगे बढ़ाने की बात की। उन्होंने इस अवसर पर राष्ट्र मण्डल संसदीय प्रक्षेत्र सम्मेलन के आयोजनकर्ताओं को और विशेष रूप से असम के माननीय मुख्यमंत्री व मा0 अध्यक्ष, असम विधान सभा को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस सम्मेलन में मुझे सभी सम्मानित व्यक्तियों से बातचीत करने व बहुत कुछ सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

''माधो बाबू'' भाजपा प्रथम प्रदेश अध्यक्ष

1977 का आपातकाल, राजनैतिक बदलाव का कालखण्ड, जनसंघ का विलय, जनता पार्टी का सत्ता में आना, दोहरी सदस्यता को लेकर पार्टी में बिखराव, कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश राजनीति के केंद्रीय भूमिका में रहा क्योंकि चन्द्रशेखर से लेकर चरण सिंह तक इसी भूमि के लाल थे। तब मुंबई के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन में अटल जी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा था" मैं यह भी जानता हूँ कि भाजपा का अध्यक्ष पद अलंकार की वस्तु नहीं है। वस्तुतः यह पद नही, दायित्व है। प्रतिष्ठा नही, परीक्षा है। अधिकार नही, अवसर है। सत्कार नही, चुनौती है। परमात्मा से प्रार्थना हैं कि वह मुझे शक्ति तथा विवेक दे, जिससे मैं इस इस दायित्व को ठीक तरह से निभा सकूँ"।

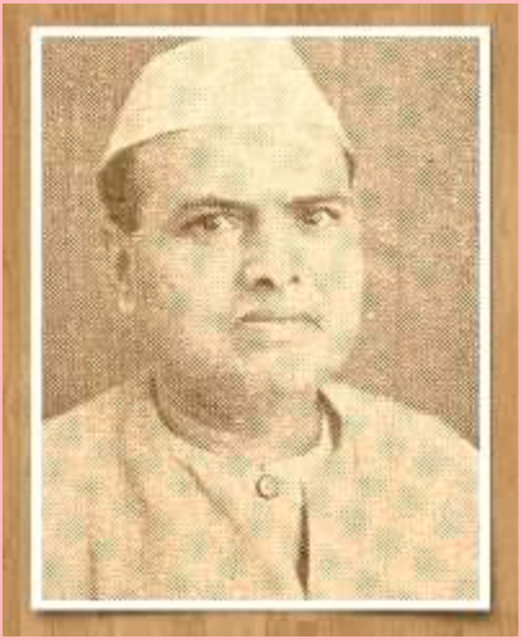

ये काल समय परिस्थिति की चुनौती थी ऐसे समय मे उत्तर प्रदेश की बागडोर पं. माधव प्रसाद त्रिपाठी को सौपी गयी, जिनकी जन्म शताब्दी का वर्ष चल रहा है। 12 सितम्बर 1917 को वर्तमान में सिद्धार्थनगर के तिवारी पुर गाँव में पंसुरेश्वर प्रसाद त्रिपाठी के घर जो बालक पैदा हुवा, वह राष्ट्रवादी राजनीति का स्तम्भ बन गया ।

उस समय तिवारीपुर बस्ती जिले में आता था बस्ती के बारे में लोग कहते थे कि **"बस्ती को बस्ती कहु तो काको कहु उजाड़"** बस स्टैंड से पक्के होते हुए कचहरी तक एक ही सड़क पर बसा यह शहर जिसका गांधी नगर प्रमुख मुहल्ला था जो गुलज़ार रहता था। जहाँ राजनीतिक लोगों का जमावड़ा होता था। यही माधो बाबू का निवास भी था। बी ए,एल एल बी की शिक्षा के दौरान ही त्रिपाठी जी का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्ध आया, जनसंघ बनने के बाद 1958 में विधान परिषद सदस्य होकर राजनीति में सक्रिय हो गये। 1962 और 69 में विधान सभा मे नेता प्रतिपक्ष व कैबीनेट मंत्री रहे। 1977 में डुमरियागंज लोकसभा का सांसद के रूप में नेतृत्व किया ।

भाजपा स्थापना काल मे जब दो सांसद थे आज 284 सांसदों के साथ हम विश्व के सबसे बड़े राजनैतिक दल के रूप में स्थापित है । पं दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि भाजपा राष्ट्रहित सर्वप्रथम वाली पार्टी है। जिसपर चलते हुए भाजपा आज प्रथम स्थान पर खड़ी है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय के उद्घाटन में असँख्य कार्यकर्ताओं का स्मरण करते हुए उनके समर्पण, परिश्रम, व्यवहार को नमन किया, ऐसे ही समर्पित कार्यकर्ता थे माधो बाबू ।

80 के दशक की संसाधनहीन भाजपा को यशस्वी बनाने के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं की टोली के साथ अपनी कार्यसंस्कृति जिसमें अनुशासन, सामूहिकता ,सामूहिक नेतृत्व, दायित्वबोध, निष्ठा, क्रियाशीलता ,शालीनता आदि का संकल्प ले हम कार्य करते थे जिसके कारण आज हम शिखर पर विराजमान है। जिसका उद्घोष अटल जी ने सागर तट मुम्बई में किया था कि **"अँधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा,कमल खिलेगा"** आज विजय पताका चहुओर फहर रही है। ग्यारह करोड़ सदस्यों वाली पार्टी की एक कड़ी रहे माधो बाबू को आज हम सब कोटिशः नमन कर रहे है

।। वन्देमातरम् ।।

सरकार की उपलब्धियां

वित्त वर्ष 2021-22 में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 48.4 प्रतिशत बढ़कर 13,63,038 करोड़ रुपये हुआ

वित्त वर्ष 2021-22 के लिए (चौथी किस्त तक) अग्रिम कर संग्रह 16 मार्च, 2022 तक 6,62,896.3 करोड़ रुपये है, जो लगभग 40.75 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है

केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार वित्त वर्ष 2021-22 में 16 मार्च, 2022 तक प्रत्यक्ष कर संग्रह के आंकड़े बताते हैं कि शुद्ध संग्रह 13,63,038.3 करोड़ रुपये रहा, जबकि इसकी तुलना में पिछले वित्त वर्ष 2020-21 की इसी अवधि में प्रत्यक्ष कर संग्रह 9,18,430.5 करोड़ रुपये था, इस प्रकार प्रत्यक्ष कर संग्रह में 48.41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी।

वित्त वर्ष 2021-22 के लिए शुद्ध संग्रह (16 मार्च, 2022 तक) में वित्त वर्ष 2019-20 की इसी अवधि की तुलना में 42.50 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी, जब शुद्ध संग्रह 9,56,550.3 करोड़ रुपये था और वित्त वर्ष 2018-19 की इसी अवधि की तुलना में 34.96 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, जब शुद्ध संग्रह 10,09,982.9 करोड़ रुपये था।

कुल 13,63,038.3 करोड़ रुपये का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह में शामिल है— निगम कर (सीआईटी) 7,19,035.0 करोड़ रुपये (रिफंड शुद्ध) और सुरक्षा लेनदेन कर (एसटीटी) सहित व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) 6,40,588.3 करोड़ रुपये (रिफंड शुद्ध)। 16 मार्च, 2022 तक 13,63,038.3 करोड़ रुपये का संग्रह, जबकि लक्ष्य 11.08 लाख करोड़ रुपये (बीई) था और इसे संशोधित करते हुए 12.50 लाख करोड़ रुपये (आरई) निर्धारित किया गया था।

वित्त वर्ष 2021-22 (16 मार्च, 2022 तक) के लिए प्रत्यक्ष करों का सकल संग्रह (रिफंड के समायोजन से पहले) पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 11,20,638.6 करोड़ रुपये की तुलना में 15,50,364.2 करोड़ रुपये है। वित्त वर्ष 2019-20 के लिए सकल संग्रह 11,34,706.3 करोड़ रुपये रहा था, जबकि वित्त वर्ष 2018-19 की इसी अवधि में यह 11,68,048.7 करोड़ रुपये था।

कुल 15,50,364.2 करोड़ रुपये के सकल संग्रह में निगम कर (सीआईटी) 8,36,838.2 करोड़ रुपये और सुरक्षा लेनदेन कर (एसटीटी) सहित व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) 7,10,056.8 करोड़ रुपये शामिल हैं। लघु शीर्षवार संग्रह (16 मार्च, 2022 तक) में शामिल हैं— अग्रिम कर 6,62,896.3 करोड़ रुपये; स्रोत पर कर कटौती 6,86,798.7 करोड़ रुपये; स्व-मूल्यांकन कर 1,34,391.1 करोड़ रुपये; नियमित मूल्यांकन कर 55,249.5 करोड़ रुपये; लाभांश वितरण कर 7,486.6 करोड़ रुपये और अन्य लघु शीर्षों के तहत कर 3,542.1 करोड़ रुपये।

वित्त वर्ष 2021-22 में 16 मार्च, 22 तक संचयी अग्रिम कर संग्रह 6,62,896.3 करोड़ रुपये है, जबकि पूर्ववर्ती वित्त वर्ष यानी 2020-21 की इसी अवधि के लिए अग्रिम कर संग्रह 4,70,984.4 करोड़ रुपये था, जो 40.75 प्रतिशत (लगभग) की वृद्धि दर्शाता है। इसके अलावा 16 मार्च, 2022 (वित्त वर्ष 2021-22) तक संचयी अग्रिम कर संग्रह 6,62,896.3 करोड़ रुपये था और इसमें वित्त वर्ष 2019-20 की इसी अवधि की तुलना में 50.56 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी, जब अग्रिम कर संग्रह (संचयी) 4,40,281.4 करोड़ रुपये था और इसमें वित्त वर्ष 2018-19 की इसी अवधि की तुलना में 30.82 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी थी, जब अग्रिम कर संग्रह (संचयी) 5,06,714.2 करोड़ रुपये था।

16 मार्च, 2022 तक 6,62,896.3 करोड़ रुपये के अग्रिम कर के आंकड़े में निगम कर (सीआईटी) 4,84,451.8 करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर (पीआईटी) 1,78,441.1 करोड़ रुपये शामिल हैं। इस धनराशि के बढ़ने की उम्मीद है, क्योंकि बैंकों से और जानकारी की प्रतीक्षा है। वित्त वर्ष 2021-22 में अब तक 1,87,325.9 करोड़ रुपये के रिफंड भी जारी किए गए हैं। ■

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2022-23 सीजन के लिए कच्चेजूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य को मंजूरी दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने 22 मार्च को 2022-23 सीजन के लिए कच्चे जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को मंजूरी दी। यह मंजूरी कृषि लागत और मूल्य आयोग की सिफारिशों पर आधारित है।

2022-23 सीजन के लिए कच्चे जूट (टीडीएन3 के समतुल्य से टीडी5 ग्रेड) का न्यूनतम समर्थन मूल्य 4750/- रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। यह उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत पर 60.53 प्रतिशत का फायदा सुनिश्चित करेगा। 2022-23 सीजन के लिए कच्चे जूट का घोषित एमएसपी बजट 2018-19 में सरकार द्वारा घोषित उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर एमएसपी तय करने के सिद्धांत के अनुरूप है।

यह लाभ के रूप में न्यूनतम 50 प्रतिशत का आश्वासन देता है। यह जूट उत्पादकों को बेहतर पारिश्रमिक का लाभ सुनिश्चित करने और गुणवत्ता वाले जूट फाइबर को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण और प्रगतिशील कदमों में से एक है। ■

सरकार की उपलब्धियां

भारत ने 400 अरब डॉलर का उत्पाद निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य हासिल किया

भारत ने निर्धारित समय से नौ दिन पहले ही 400 अरब डॉलर का उत्पाद निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य हासिल कर लिया। यह पहला मौका है जब भारत ने 400 अरब डॉलर मूल्य के वस्तुओं का निर्यात किया है। चालू वित्त वर्ष में भारत का निर्यात 37 प्रतिशत बढ़कर 400 अरब डॉलर पर पहुंच चुका है। वित्त वर्ष 2020-21 में यह 292 अरब डॉलर रहा था। निर्यात के मामले में भारत का पिछला सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2018-19 में 330 अरब डॉलर का रहा था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 400 अरब डॉलर का उत्पाद निर्यात लक्ष्य हासिल करने पर कहा कि देश को 'आत्मनिर्भर भारत' बनाने में यह एक अहम पड़ाव है। साथ ही, श्री मोदी ने किसानों, बुनकरों, एमएसएमई, विनिर्माताओं तथा निर्यातकों की सराहना की।

एक ट्वीट में प्रधानमंत्री ने 23 मार्च को कहा कि भारत ने 400 अरब डॉलर मूल्य के वस्तुओं के निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया था और देश ने पहली बार इस लक्ष्य को हासिल किया है। मैं इस सफलता के लिए अपने किसानों, बुनकरों, एमएसएमई, विनिर्माताओं तथा निर्यातकों को बधाई देता हूं। यह हमारी 'आत्मनिर्भर भारत' यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

भारत से वस्तु निर्यात चालू वित्त वर्ष के दौरान निर्धारित तिथि से नौ दिन पहले ही 400 अरब डॉलर से अधिक हो गया। यह वित्त वर्ष 2018-19 में अर्जित 330 अरब डॉलर के पिछले रिकॉर्ड से बहुत अधिक है

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण तथा कपड़ा मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कहा कि 400 अरब डॉलर का निर्यात हासिल करना देश के प्रत्येक सेक्टर, प्रत्येक हितधारक के ठोस, सामूहिक प्रयास का परिणाम है। भारत से वस्तु निर्यात चालू वित्त वर्ष के दौरान निर्धारित तिथि से नौ दिन पहले ही 400 अरब डॉलर से अधिक हो गया है। यह वित्त वर्ष 2018-19 में अर्जित 330 अरब डॉलर के पिछले रिकॉर्ड से बहुत अधिक है।

श्री गोयल ने 23 मार्च को कहा कि इस आकर्षक निर्यात लक्ष्य की प्राप्ति ने विश्व को दिखा दिया कि अनगिनत चुनौतियों का सामना करने के बावजूद दृढ़ संकल्प, लगन, क्षमता और प्रतिभा के साथ भारत सभी प्रकार की बाधाओं को पार करेगा। उन्होंने सभी निर्यातकों, किसानों, बुनकरों, एमएसएमई, विनिर्माताओं, विदेश स्थित भारतीय मिशनों तथा अन्य हितधारकों के प्रति कृतज्ञता जताई।

श्री गोयल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को आगे बढ़कर लगातार अगुवाई करने तथा निर्यात पर निरंतर ध्यान केंद्रित करते रहने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा की गई स्पष्ट अपील ने ही उद्योग को निर्यात में भारी उछाल लाने के लिए प्रेरित किया।

गौरतलब है कि कोविड की भीषण चुनौतियों के बावजूद भारत के वस्तु व्यापार प्रदर्शन ने प्रभावशाली बढ़ोतरी प्रदर्शित की तथा निर्यात अप्रैल से फरवरी के दौरान 11 लगातार महीनों (मार्च के अंत में लगातार 12 महीनों तक संभव) तक 30 अरब डॉलर से अधिक रहा, जिसमें विशेष रूप से दिसंबर, 2021 के दौरान 39.3 अरब डॉलर का अब तक का सर्वोच्च मासिक वस्तु व्यापार रिकॉर्ड किया गया।

इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात 2021-22 के दौरान पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत बढ़ा है। उच्चतर इंजीनियरिंग निर्यात, अपैरल तथा गारमेंट निर्यात आदि से संकेत मिलता है कि भारत की प्राथमिक वस्तुओं का प्रमुख निर्यातक होने की गलत धारणा अब धीरे-धीरे बदल रही है। अब हम अधिक से अधिक मूल्यवर्धित वस्तुओं तथा हाईएंड वस्तुओं का निर्यात कर रहे हैं।

सूती धागे/फैब्रिक्स/मेडअप्स/हथकरघा उत्पाद आदि, रत्न एवं आभूषण, अन्य अनाज तथा मानव निर्मित यार्न/फैब्रिक्स/मेडअप्स आदि के निर्यात ने 50 प्रतिशत से 60 प्रतिशत के बीच की वृद्धि दर दर्ज कराई है।

कृषि क्षेत्र ने भी, विशेष रूप से महामारी के दौरान उल्लेखनीय प्रगति दर्ज कराई, जिसमें भारत खाद्य/अनिवार्य कृषि उत्पादों के एक प्रमुख वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश के रूप में उभरा है। कृषि निर्यात में उछाल अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त चावल (बासमती तथा गैर-बासमती दोनों), समुद्री उत्पादों, गेहूं, मसालों तथा चीनी जैसी वस्तुओं से प्रेरित है, जिसने 2021-22 के दौरान अब तक का सर्वाधिक कृषि उत्पाद निर्यात दर्ज कराया। ■

वैचारिकी

जनसंघ दल नहीं, आंदोलन है : दीनदयाल

भारतीय जनसंघ अलग तरह का दल है। यह उन लोगों का समूह नहीं है, जो किसी भी तरह सत्ता पाना चाहते हैं। न ही यह किसी निहित स्वार्थ विशेष का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि केवल अपने पक्ष में प्रचार करने तक सीमित हो। इन्हें इस बात का भी कोई दुःख नहीं है कि जब ब्रिटिश भारतीयों को सौंपकर गए तो यहां के शासकों ने इन्हें सत्ता में हिस्सेदार नहीं बनाया। वास्तव में जनसंघ की नींव रखनेवाले प्रथम अध्यक्ष श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी केंद्रीय मंत्री परिषद् के सदस्य थे और पूर्वी बंगाल के अल्पसंख्यकों की रक्षा के मुद्दे पर उनके त्याग–पत्र के पश्चात् ही इस नए दल की स्थापना का विचार आया।

जनसंघ उन लोगों का जमावड़ा भी नहीं है, जो कि इस नए युग के आगमन से राजनीतिक और आर्थिक रूप से विस्थापित हुए हैं। इसके किसी सदस्य के नाम के साथ 'पूर्व' उपसर्ग शायद ही लगाया जा सकेगा। अपने अतीत की कमाई पर जाने की अपेक्षा हम अपने वर्तमान के कर्मों पर निर्भर हैं। यद्यपि जनसंघ की व्याख्या प्रसिद्ध 'नेति नेति' शब्दों में की जा सकती है, जिससे विपक्षी संतुष्ट न होंगे। यद्यपि यह बात ही सत्य है। इसलिए वे पूछ सकते हैं कि "आखिरकार यह है क्या?"

जनसंघ दल नहीं, आंदोलन है

सचमुच भारतीय जनसंघ एक दल न होकर एक आंदोलन है। यह भारत के आत्मस्वरूप की प्राप्ति की तीव्र आकांक्षा से पैदा हुआ है। राष्ट्र को जो नियति तय है, उसे आकार देने और प्राप्त करने की यह इच्छा है। यह केवल मात्र लोगों की उस इच्छा की अभिव्यक्ति है, जो खुली हवा में सांस लेना चाहती है, उन शारीरिक और मानसिक बंधनों से मुक्ति चाहती है, जिन्होंने हमारी आत्मा को बंदी बनाकर इस राष्ट्र को गरुड़ की तरह सर्वोच्च शिखर तक उड़ने से रोक रखा है, जहां पहुंचकर यह उस सर्वोच्च का अंग बन सके। यह सृष्टि क्रम में अपना स्थान खोजने का प्रयास है, ताकि राष्ट्र के रूप में सोद्देश्य और सुखी जीवन जी सकें और मानवता की सेवा कर सकें।

भारतीय संस्कृति और मर्यादा जनसंघ के आधार हैं। भारतीय संस्कृति कुछ विशिष्ट लोगों की संस्कृति की परिचायक न होकर एक विश्व–दर्शन की परिचायक है। यह बंटे हुए विश्व को एक कर शांति प्रदान कर सकती है। सह–अस्तित्व और एकता के आदर्श मात्र राजनीतिक नारेबाजी बनकर रह जाएंगे, यदि इस महान् संस्कृति से अनुप्राणित नहीं होंगे। यह हमारा जीवन लक्ष्य है। दायित्व वहन और कर्तव्य निर्वहन भी उत्कट इच्छा को पश्चिम की यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा अपने शासन के औचित्य को ठहराने के लिए गढ़े गए 'सफेद लोगों का बोझा' सिद्धांत के तुल्य नहीं मानना चाहिए। भूरे लोगों का कोई बोझा नहीं है। हमें न ऐसे भ्रम हैं और न हमारी ऐसी योजनाएं हैं। हमारी भूमिका उपदेशकों की नहीं, उदाहरण पेश करनेवालों की है। सदा से यही हमारा मार्ग रहा है। मनुस्मृति में कहा गया है, "माशा भर व्यवहार मनों उपदेशों से बेहतर है।" यह एक पुरानी कहावत है। हमारे लिए इसमें एक शिक्षा है।

भारतीय संस्कृति क्या है ?

इस छोटे से लेख में मेरा उद्देश्य भारतीय संस्कृति का प्रतिपादन अथवा उसकी व्याख्या करना नहीं है। यह विखंडनात्मक या विश्लेषणात्मक न होकर समग्रतावादी है। यह जैविक है, मिश्रित नहीं। यह समग्र मनुष्य को न केवल समाज का बल्कि सृश्टि का अंग मानती है। पश्चिम के अनेक दर्शनों में मनुष्य को सृष्टि में सर्वोपरि स्थान देने के बावजूद वहीं पर अमानवीयकरण की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। मनुष्य को पुनर्जीवित और उदात्त बनाने के लिए, जीवन दर्शन को मानवीय बनाने, राजनीति, आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं को अधिक मानवीय बनाने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति यही कार्य करने का प्रयास करती है। यह कहना कि इसमें चरम शिखर पर पहुंच गए बड़बोलेपन, शोध की आत्मा के विपरीत और विकास के विरुद्ध कथन होगा, परंतु इस दिशा में गंभीर प्रयास हुआ है और जो सफलता मिली है, उससे आशा जगती है कि और सफलता के लिए प्रयास करें।

भारतीय संस्कृति जड़ न होकर गतिशील है। वास्तव में गतिशीलता ही जीवन है। जब आपका विकास रुक जाता है, आप निष्क्रिय होने लगते हैं और निष्क्रियता बिखराव तथा मृत्यु की ओर ले जाती है। अपने स्वर्णिम अतीत और दुर्दशापूर्ण वर्तमान के कारण समाज में दो तरह की प्रवृत्तियां प्रचलित हैं। एक पुरातन को स्वीकारती है जो कि वास्तव में इसे अपना संस्कार मानती है, जिस पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता। दूसरी प्रवृत्ति परिवर्तन की लालसा हर क्षेत्र में रखती है और इस बात की भी चिंता नहीं करती कि परिवर्तन की दिशा क्या हो और उसकी शक्ल क्या बनती है। जनसंघ इन दोनों प्रवृत्तियों का निषेध करती है। अतीत से हम प्रेरित हों। परंतु हमारी दृष्टि अग्रगामी होनी चाहिए। जो कुछ हमें विरासत में मिला है, उस सारे को सुरक्षित रखना पूर्वजों की सेवा नहीं है। हमें तो गुलामी भी विरासत में मिली थी। मनुष्य ने अपनी इस विरासत से मुक्ति के लिए कठोर संघर्ष किया है। इस तरह हज़ारों अन्य विरासतें हो सकती हैं। इनसे मुक्ति ही एकमात्र उपाय है। उधार चुकाया जाना चाहिए और पूंजी की सुरक्षा तथा परिवर्धन होना चाहिए। जो लोग केवल संरक्षण की बात करते हैं, वे प्रकृति के नियमों को भूल जाते हैं।■

- ऑर्गनाइजर, दीवाली, 1964 (अंग्रेजी से अनूदित)

श्रद्धांजलि

कुशल संगठक सुन्दर सिंह भण्डारी

(12 अप्रैल, 1921 — 22 जून, 2005)

कुशल संगठक श्री सुन्दर सिंह भण्डारी का जन्म 12 अप्रैल, 1921 को राजस्थान स्थित उदयपुर के एक जैन परिवार में हुआ था। मूलतः उनका परिवार भीलवाड़ा के मण्डलगढ़ से संबंध रखता था, परन्तु उनके दादा वहां से उदयपुर चले गए। श्री भण्डारी के पिता डॉ. सुजान सिंह भण्डारी एक डॉक्टर थे। इस कारण उन्हें सदैव घूमते रहना पड़ता था। श्री भण्डारी की शिक्षा कई स्थानों पर हुई। उन्होंने उदयपुर से सिरोही से इंटरमीडिएट परीक्षा पास की और डीएवी कॉलेज, कानपुर से बी.ए. और एम.ए. किया। उन्होंने अर्थशास्त्र में एम.ए. पास किया और बाद में कानून का अध्ययन किया।

शांत भाव के श्री भण्डारी जीवन भर अविवाहित रहे और राष्ट्र की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। 1942 में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद श्री भण्डारी ने मेवाड़ उच्च न्यायालय में लीगल प्रेक्टिस शुरू की। 1937 में उन्होंने एस.डी. कॉलेज, कानपुर में प्रवेश लिया, जहां पं. दीनदयाल उपाध्याय उनके सहपाठी थे। 1937 में इंदौर के बालू महाशब्दे ने उन्हें कानपुर के निकट नवाबगंज की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में ले गए थे। तब से वे सदैव अपनी अंतिम सांस तक रा. स्व. संघ की विचारधारा के प्रति समर्पित रहे।

1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। रा. स्व. संघ से जिन प्रमुख कार्यकर्ताओं को जनसंघ में कार्य के लिए भेजा गया था, उनमें श्री भण्डारी का नाम प्रमुख रूप से शामिल था। 1951 से 1965 तक श्री भण्डारी ने राजस्थान जनसंघ में महामंत्री का दायित्व निभाया। इसके अलावा वे जनसंघ के अखिल भारतीय मंत्री थे। पं. दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु के बाद 1968 में भण्डारी जी को अखिल भारतीय महामंत्री (संगठन) बनाया गया।

उन्होंने 1977 तक जनसंघ महामंत्री के पद पर कार्य किया। वह 1966–1972 के समय राजस्थान से राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 1998 में उन्हें बिहार का राज्यपाल और 1999 में गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया गया। भण्डारी जी ने कार्यकर्ताओं के सामने सरलता, सहनशीलता और मितव्ययता का उदाहरण पेश किया।

उन्होंने अनुशासित पार्टी की छवि कायम रखी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से उच्च जीवन-शैली बनाए रखने का आह्वान किया। वह एक ऐसे मूर्तिकार और कार्यकुशल कारीगर थे, जिन्होंने मानव, समाज और संगठन की प्रतिमा बनाई। वह कभी भी 'कलश' नहीं बनना चाहते थे। वे अत्यंत स्पष्टवादी थे। अपनी प्रकृति के कारण वे कार्यकर्ताओं में 'हेडमास्टर' के नाम से सुप्रसिद्ध हो गए। उन्होंने अपना सारा जीवन मातृभूमि को समर्पित किया तथा जीवनभर के रा.स्व. संघ के प्रचारक बने रहे। 22 जून, 2005 को उनका स्वर्गवास हो गया। ■

श्री सुन्दर सिंह भण्डारी ने अनुशासित पार्टी की छवि कायम रखी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से उच्च जीवन-शैली बनाए रखने का आह्वान किया। वह एक ऐसे मूर्तिकार और कार्यकुशल कारीगर थे, जिन्होंने मानव, समाज और संगठन की प्रतिमा बनाई। वह कभी भी 'कलश' नहीं बनना चाहते थे। वे अत्यंत स्पष्टवादी थे। अपनी प्रकृति के कारण वे कार्यकर्ताओं में 'हेडमास्टर' के नाम से सुप्रसिद्ध हो गए

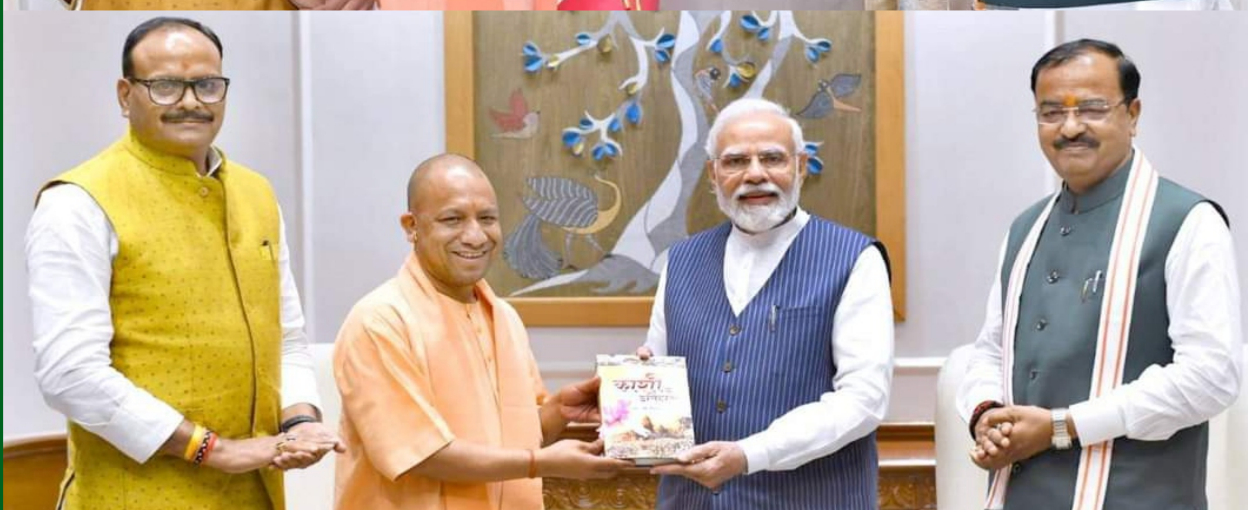

नया भारत, सर्वोत्तम उत्तर प्रदेश गढ़ने का संकल्प

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अप्रैल प्रथम अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी